चन्दामामा
जून १९९१

पागल

पहला सर्कस चालबाज़, जो जोकर था शाबाश. उसे सही पहचाना! राज़ ढूंढने वाले यार अपनी बीएसए एसएलआर पर सवार अब पागल वेसोविच का पता लगाने चल पड़े दीवाने. वैज्ञानिकों का दावा है उसके पास एक छोटी मगर निहायत जोखिम भरी उड़नशतरी है, जो नये शहर को उड़ा देगी, आबादी आग की लपटों में डुबा देगी. क्या राज़ ढूंढने वाले यार रोक सकेंगे ये संहार?

"मेरी नन्ही मुन्नी उड़नतशतरी. खुशखबरी. हम दोनों 5 बजे सुबह ढायेंगे कहर, उड़ा देंगे ये नया शहर." पागल वेसोविच अपनी चींचीं आवाज में बोला. राज़ ढूंढने वाले यार हो गये सावधान, दीवारों से सटाए कान. पागल वेसोविच की अपनी घड़ी पर नज़र. उसने एक दूसरी घड़ी उठाई और उसे भी किया उसी समय पर. उसने दूसरी घड़ी उड़नतशतरी में लगाई. उड़नतशतरी गैरेज में छिपाई. और अंदर गायब हो गये पागल वेसोविच भाई.

शुरू काम, बरबादी नाकाम

रमन ने छोड़ी मजाक की एक फुलझड़ी. "चुप, रमन . ऐसी घड़ी में, तुम्हें हसंने हसाने की क्यों पड़ी." पूजा ने कहा, अचानक विपुल ने अपनी

बीएसए एसएलआर की घंटी टनटनाई,
जैसा वो चाहता था वैसा ही उसके दिमाग़ में
कोई आइडिया आया "यार... क्यों न हम..."
फिर तो सबने कर दी 'हां' उसी दम.

विपुल दीवार के पीछे गायब हो गया. मुद्दत के बाद वो दिखा लौटकर आता रहस्यमय ढंग से मुस्कराता. अपनी अपनी बीएसए एसएलआर की लगाये क़तार वो कर रहे थे इंतज़ार. पर पागल वेसोविच बाहर आया और उसने चगो चोटी की ओर क़दम बढ़ाया.

घुमावदार, झटकेदार, तेज़ हवामार राहों से होते चोटी तक पहुंचे राज़ ढूंढने वाले यार अपनी अपनी बीएसए एसएलआर पर सवार.

टनटनाई और पागल वेसोविच की शामत आई वह पकड़ा गया.

विपुल ने अपनी कलाई याहू करके उसे दिखाई. शैतान की आंत... वेसोविच चिल्लाया दिखाके दांत.

बूझो नया शहर कैसे बचा?

वेसोविच का रहस्य

यारों की फतह.

चोटी पर थी खड़ी पागल वेसोविच की उड़नतशतरी ठीक 5 बजे उसने रिमोट दबाया. न कुछ गया, न कुछ आया. वह घबराया.
यारों का दल मुस्कराता सुबह 5 बजकर 5 मिनट. यारों की फतह. उनके बीएसए एसएलआर की घण्टियां

यह जानने के लिए कि क्या पागल वेसोविच कामयाब हुआ, पढ़ो "अभागे जूते का रहस्य." तब तक चलाते रहो यार अपनी बीएसए एसएलआर.

MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
मैगी क्लब से मुफ़्त उपहार पाओ, मौज-मस्ती के रंग जमाओ!
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल हो जाओ, सारे साल मौज मनाओ.
न्यूज़ लैटर्स, उपहार, गेम्स और मौज-मस्ती की कई अन्य चीज़ें...
बस तुम यह मैगी नूडल्स के
5 खाली रैपरों के सामने के हिस्से से काटकर हमें भेज दो.
और, साथ में अपना नाम, पता और अपनी पसंद का उपहार भी
लिख भेजना. हां, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो सदस्यता
संख्या भी ज़रूर लिखकर भेजना. और, अगर तुम मैगी क्लब के
सदस्य नहीं हो तो अब मौका मत चूकना. अपना विवरण भेजते
समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. हम तुम्हारे उपहार
के साथ मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे!
हमारा पता है:
मैगी क्लब
पो. ओ. बॉक्स 5788
नई दिल्ली-110 055
'मैगी ऑपरेशन वाइल्डलाइफ गेम' द्वारा वन्य प्राणियों की रक्षा करो.
'मैगी जादू जंगल' से अपना जंगल बनाओ.
Archie
आर्ची कॉमिक!
KING OF THE JUNGLE
'मैगी किंग ऑफ़ दी जंगल गेम' में जंगल की सैर करो
To LET
'मैगी बर्डहाउस' बनाओ
मुफ़्त! मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' विश्व पुस्तिका.
तुम जो 3 उपहार इकट्ठे करोगे
तो उसके साथ हम तुम्हें मुफ़्त
मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स'
विश्व पुस्तिका भेजेंगे. उसमें
तुम्हें मिलेगी वन्य-प्राणियों
के बारे में दिलचस्प और
आश्चर्यजनक जानकारी.
हर गेम में पूरा विवरण
देख लेना.
मुफ़्त
MAGGI
2-minute noodles
EASY TO COOK! GOOD TO EAT!
Name:
Membership no.:

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

लोक सत्ता

१९९१ की पहली छमाही में दो मुख्य सरगरमियाँ रहीं और दोनों के परिणाम अब हमारे सामने हैं । दोनों का ही ताल्लुक भारत के लोगों से था । पहली सरगरमी थी भारत की जनगणना को लेकर, जो मार्च में ख़त्म हुई । यह दस साल में एक बार होती है । इसने यह स्पष्ट कर दिया कि १९८१ से अब तक हमारी जनसंख्या २३.५ प्रतिशत की दर से बढ़ी है और इस समय भारत में ८४.३९ करोड़ लोग बसते हैं । इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जनसंख्या की दृष्टि से भारत दूसरे स्थान पर है । पहला स्थान चीन का ही है जहाँ ११६ करोड़ लोग बसते हैं ।

बेशक, जनगणना दस वर्षों में एक बार होती है, पर इसके पीछे भारी आयोजन और तैयारी रहती है । इसके बरअकस मध्यावधि चुनाव एकाएक होते हैं और कई बार ऐसी राजनीतिक गतिविधियों के कारण होते हैं जिनसे बचा नहीं जा सकता । केंद्र में चार-माह पुरानी चंद्रशेखर सरकार अपने को अस्थिर पा रही थी । इसलिए स्थिर सरकार बनाने के लिए मध्यावधि चुनाव संबंधी निर्णय ज़रूरी हो गया ।

जिस समय यह अंक आपके हाथों में होगा, उस समय तक केंद्र में तथा कुछ राज्यों में नयी सरकारें बन चुकी होंगी । लेकिन यह बहस एक लंबे समय तक चल सकती है कि क्या १९८९ के आम चुनावों के बाद इतनी जल्दी देश को इन चुनावों की ज़रूरत थी? हाँ, यह बात तो आम जनता ही तय करेगी कि जो भी सरकार बने, वह अगले पांच वर्षों तक मज़बूती से चलती रहे ।

वर्ष : ४३ — जून १९९१ — अंक : १०

एक प्रति : ३ रुपये — वार्षिक चन्दा : ३६ रुपये

बच्चों!
इस बार बालहंस में
खेल-खिलौना विशेषांक
पुराण कथा विशेषांक

जून/ प्रथम' 91

खेल- खिंलौना विशेषांक

गर्मी की लम्बी दोपहर में-
बच्चों का ऐसा साथी
जो न उन्हें सोने देगा
न बाहर जाने देगा।
खेल, खेल, ढेर सारे खेल।
बच्चे तो खेलेंगे ही, बड़े भी
खेलने को ललचा उठेंगे।
खेल और मनोरंजन के साथ
ढेर सारी कहानियां, नई
प्रतियोगिताएं और सभी स्थाई स्तंभ-

जून/द्वितीय' 91

पुराण कथा विशेषांक

कहानियों का ऐसा पिटारा
जिसे इन गर्मियों में तो बच्चे
अपने पास रखेंगे ही...
पर आगे भी पढ़ेंगे और
बार-बार पढ़ेंगे इन पुराण-
कथाओं को...
जीवन-पथ को आलोकित
करने वाली ये कहानियां
सदा याद रहेंगी।
ऐसे जाने-अनजाने रत्नों के ढेर में से कुछ-
नई प्रतियोगिताएं और सभी स्थाई स्तंभ-

पृष्ठ 84, मूल्य 4/-

JPC/98/91

संघ बना रहेगा

सोवियत संघ के लोगों से हाल ही में एक सवाल पूछा गया । उन्हें जवाब केवल एक ही शब्द में देना था– 'हाँ' या 'न' में । भारी संख्या में लोगों ने 'हाँ' कहा । यह तब हुआ जब देश ने अपने पहले-पहल 'रेफरेंडम' (मताधिकार) का सहारा लिया ।

शाब्दिक दृष्टि से 'रेफरेंडम' का अर्थ है 'वह जिसका उल्लेख किया जाये' । लेकिन आज के युग में यह एक 'राजनीतिक कदम' से ताल्लुक रखता है, और 'वैधानिक कदम' के यह विपरीत है । 'वैधानिक कदम' आम तौर पर लोगों के चुने हुए प्रतिनिधियों का विशेषाधिकार माना जाता है। इसे 'इनिशियेटिव' भी कहते हैं, यानी 'वह जिसकी शुरुआत करनी है' । जब कोई देश सीधे-सीधे चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से नहीं, अपने यहाँ रहने वाले लोगों का मत जानना चाहता है तो वह 'रेफरेंडम' का सहारा लेता है । इसके लिए मतदाताओं से एक सवाल किया जाता है और उसका जवाब मतपटी के ज़रिये मांगा जाता है ।

सोवियत मतदाता से जो सवाल किया गया, वह था : "क्या आप सोवियत समाजवादी गणतंत्र संघ का मौजूदा संघीय स्वरूप बनाये रखना चाहते हैं जिसमें सभी राष्ट्रों को बराबर का अधिकार और स्वतंत्रता मिल सके?"

यह सवाल क्यों किया गया? सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचोव ने जब अपनी नयी नीति, जिसे दो शब्दों– 'पेरेस्त्रोयका' तथा 'ग्लासनास्त' में, जो कि अब हर किसी की ज़बान पर हैं, बंद किया गया, और इसके तहत सत्ता के विकेंद्रीकरण और धार्मिक उदारता की घोषणा की गयी, तो देश के सामने कई समस्याएँ आ खड़ी हुईं–जैसे खाद्य पदार्थों की कमी, पैसे का अधिक चलन और सोवियत संघ के प्रति वहाँ के कई राष्ट्रों के रवैये में दयनीय परिवर्तन । यह बात यहाँ तक बढ़ी कि कुछ गणतंत्रों ने तो सोवियत संघ से हट जाना ही चाहा । कहीं-कहीं ज़ोरदार प्रदर्शन भी हुए जिन्होंने हिंसात्मक गतिविधियों का रूप ले लिया । राष्ट्रपति गोर्बाचोव ने संसद का
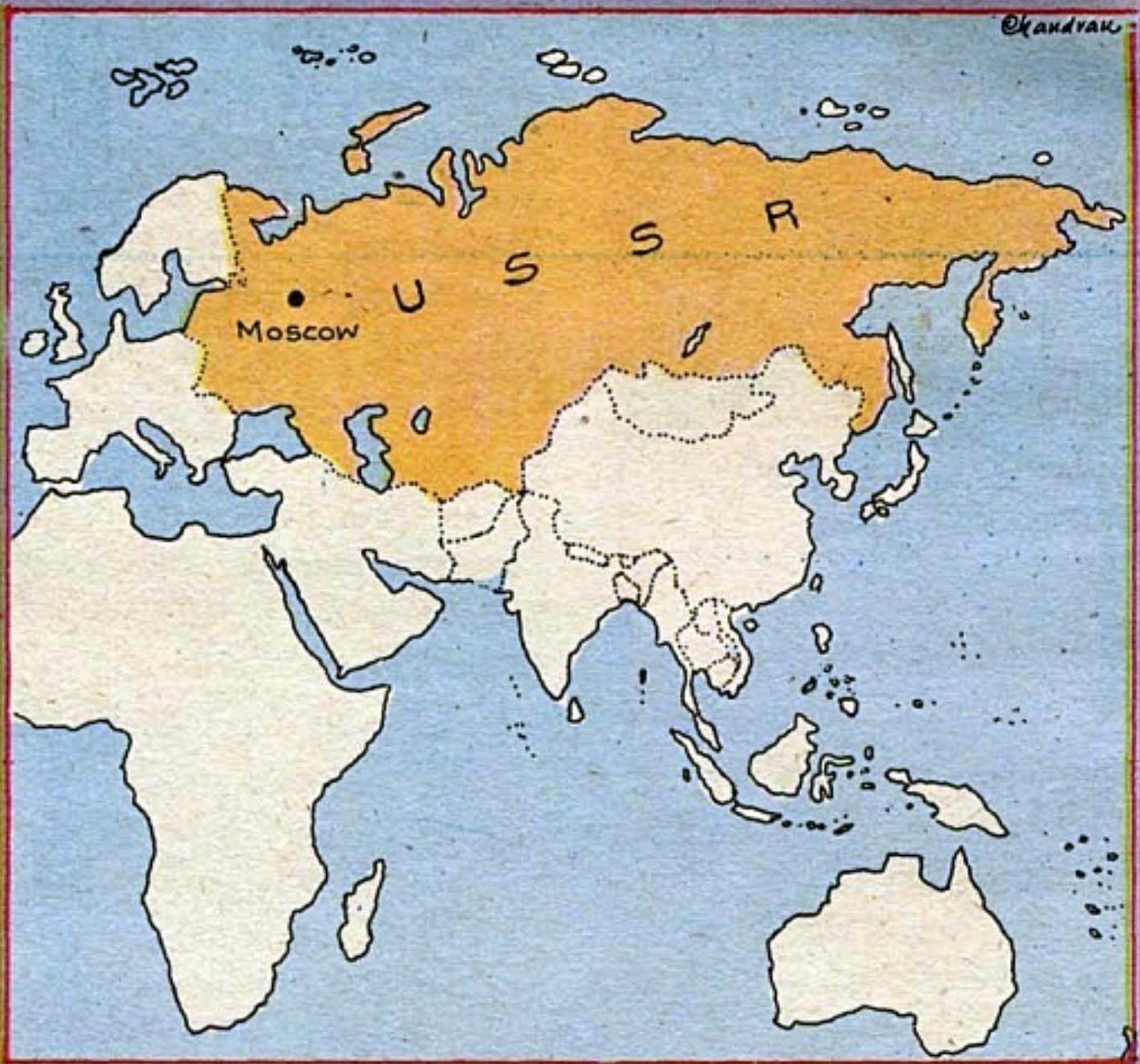
सहारा लेते हुए सर के बल कूदने का निर्णय लिया। 'रेफरेंडम' के परिणाम अब सामने आ गये हैं और राष्ट्रपति गोर्बाचोव अपने उद्देश्य में सफल रहे हैं। छः छोटे गणतंत्रों को छोड़कर, जिन्होंने अधिकृत तौर पर इस रेफरेंडम में हिस्सा नहीं लिया, बाकी नौ गणतंत्रों ने जहाँ देश की ९० % जनता बसती है, संघ के पक्ष में ज़ोरदार समर्थन दिया है।

इस 'रेफरेंडम' ने दो बातें स्पष्ट की हैं—एक तो राष्ट्रपति गोर्बाचोव की नीति का परोक्ष रूप से समर्थन और दूसरे सोवियत संघ को टुकड़े-टुकड़े होने से बचाना। इससे एक लाभ और भी हुआ है–कि देश की सौ से अधिक जातियाँ अब अपने विचारों और गतिविधियों का और खुले ढंग से अनुसरण कर सकती हैं।

सामजी की थाली

बलिया गाँव में शिवदेव नाम का एक व्यापारी रहता था । उसका धान का व्यापार था । एक बार उसे किसी काम से शहर जाना पड़ा । रात हुई तो उसे अपने बहनोई सुभाष का ख्याल आया । सुभाष और उसकी पत्नी, यानी शिवदेव की बहन, भारती, यहीं शहर में रहते थे ।

शिवदेव को शहर में तीन-चार दिन रहना था, क्योंकि उस का काम लंबा था । दूसरे, बहन-बहनोई से मिलने का इस से बढ़िया अवसर और क्या हो सकता था! इसलिए वह बेहिचक उनके यहाँ चला गया था ।

घर पर साले को आया देख सुभाष ने ज़ाहिरा तौर पर बड़ी खुशी दिखायी और बोला, "आओ, आओ, शिव! बहुत अच्छे वक्त पर आये । हम खाना खाने ही जा रहे थे! आओ, मुंह-हाथ धो लो और तुम भी हमारे साथ बैठ जाओ ।"

शिवदेव भूखा तो था ही । वह वहीं उनके साथ बैठ गया । लेकिन यह क्या! उन्होंने तो पहले से ही तीन थालियाँ लगा रखी थीं! उसने चौंक कर पूछा, "यह कैसे? क्या आप लोग पहले से ही जानते थे कि मैं आने वाला हूँ?"

शिवदेव के प्रश्न पर सुभाष हंस दिया । बोला, "यह तीसरी थाली मेरी माँ के लिए परोसी गयी थी!"

"आपकी माँ?" शिवदेव और हैरान हुआ, "पर उसे तो स्वर्ग सिधारे कई साल हो गये होंगे न!"

"तुम ठीक कहते हो!" सुभाष ने शिवदेव की हैरानी मिटाने की कोशिश करते हुए कहा, "पर वह अब भी हमारे साथ ही है । हमें चाहे वह दिखाई न दे, भारती को बराबर दिखाई देती है, और वक्त पड़ने पर उसे सलाह भी देती है!"

"अच्छा! तब थाली में परोसे उस खाने को

अनिता धवन

तैयार किया और उसे उसी तरह थाली में परोसकर और उस थाली को एक दूसरी थाली से ढांप कर रख दिया ।

बातों का सिलसिला चल पड़ा था । सुभाष के मुंह से ऐसे ही निकल गया, "मैं बहुत खुश नसीब हूँ, शिव कि मुझे भारती जैसी पत्नी मिली । कहाँ तो दूसरी बहुएँ ज़िंदा सास की परवाह नहीं करतीं, और कहाँ यह मेरी चल बसी माँ के लिए चिंतातुर रहती है! बहू-सास में, लगता है, खूब बनती है ।"

शिवदेव को सुभाष और भारती ने अलग कमरे में सुलाया था । सुबह शिवदेव जल्दी उठ गया । सुभाष और भारती अभी सो ही रहे थे । शिवदेव सीधा रसोई घर में गया । वहाँ भारती की सास वाली थाली वैसे ही ढकी रखी थी । उसने उस पर से दूसरी थाली उठायी । पहले वाली थाली बिलुकल सफाचट हो चुकी थी । शिवदेव की हैरानी बढ़ती ही गयी ।

दूसरे दिन रात को जब शिवदेव अपने काम पर से लौट रहा था तो उसे रास्ते में ही सुभाष और भारती मिल गये । दोनों बाज़ार की ओर जा रहे थे । शिवदेव को देखते ही सुभांष बोला, "शिव, पड़ोसियों को हमने चाभी दे दी है । उन से ले लेना, हां, तुम्हारे पास अगर चार सौ हों, तो दो । तनख्वाह मिलते ही लौटा दूंगा ।"

शिवदेव ने सुभाष को चुपके से चार सौ रुपये दे दिये । पति-पत्नी तो वहाँ से बाज़ार की ओर बढ़ गये और शिवदेव घर लौट

वह कब खाती हैं?" शिवदेव की हैरानी उसी तरह बनी हुई थी ।

"हम जब खाना खा चुकते हैं तो इस थाली को एक दूसरी थाली से ढांप देते हैं । सासजी रात को किसी समय आती होंगी । पर सुबह यह थाली हमें खाली मिलती है!" यह उत्तर भारती ने दिया था ।

"खूब! अब अगर मैं यह खाना खा लूँ, तब तुम्हारी सास क्या खायेगी?" शिवदेव ने भारती से पूछा ।

"तुम चिंता मत करो, भैया । उनके लिए मैं और खाना पका लूंगी," भारती ने सादगी से कहा ।

अब तक वे तीनों खाना खा चुके थे । भारती ने अपनी सास के लिए फिर से खाना

आया ।"

उस रात पति-पत्नी काफी देर से घर वापस आये । भारती के हाथ में एक नयी रेशमी साड़ी थी । वह एक कुर्सी के निकट गयी और उसे संबोधित करते हुए बोली, "यह लो, माँ!तुमने नीले रंग की साड़ी कही थी न! तुम्हारे बेटे ने तुम्हारे लिए खरीद दी है । क्या तुम्हें पसंद है?"

फिर भारती अपने पति की ओर मुड़ी और बोली, "माँ कहती है कि उसके लिए इसे पहनूंगी तो मैं ही । मुझे पसंद है तो उसे भी पसंद है!"

सुभाष को संतोष हुआ । उसने सर हिला दिया । रात को खाना खाने बैठे तो सास की थाली भारती ने वैसे ही परोसी । फिर उस थाली की ओर देखते हुए वह बोली, "माँ, यह तुम क्या कहती है? घर आये मेहमान को हम वापस जाने के लिए कैसे कहें? हम से यह सब मत कहलवाओ ।"

"क्या हुआ भारती? माँ क्या कहती है?" सुभाष ने आश्चर्य से पूछा ।

"सासजी की परेशानी है कि बहू चाहे किसीकी भी हो, उसे अकेला नहीं छोड़ना चाहिए । वह भी तो आखिर किसी की बेटी है! इसलिए भैया को फौरन वापस चले जाना चाहिए!" भारती ने उत्तर दिया ।

शिवदेव वहीं पास में ही था । उसने पति-पत्नी की बात सुनी । फिर वह हंसकर बोला, "बहन, अपनी सास से कह दो कि मैं परसों चला जाऊंगा । मुझे भी चिंता है । कल शाम तक मेरा काम पूरा हो जायेगा ।"

उस रात बहुत देर तक शिवदेव को नींद
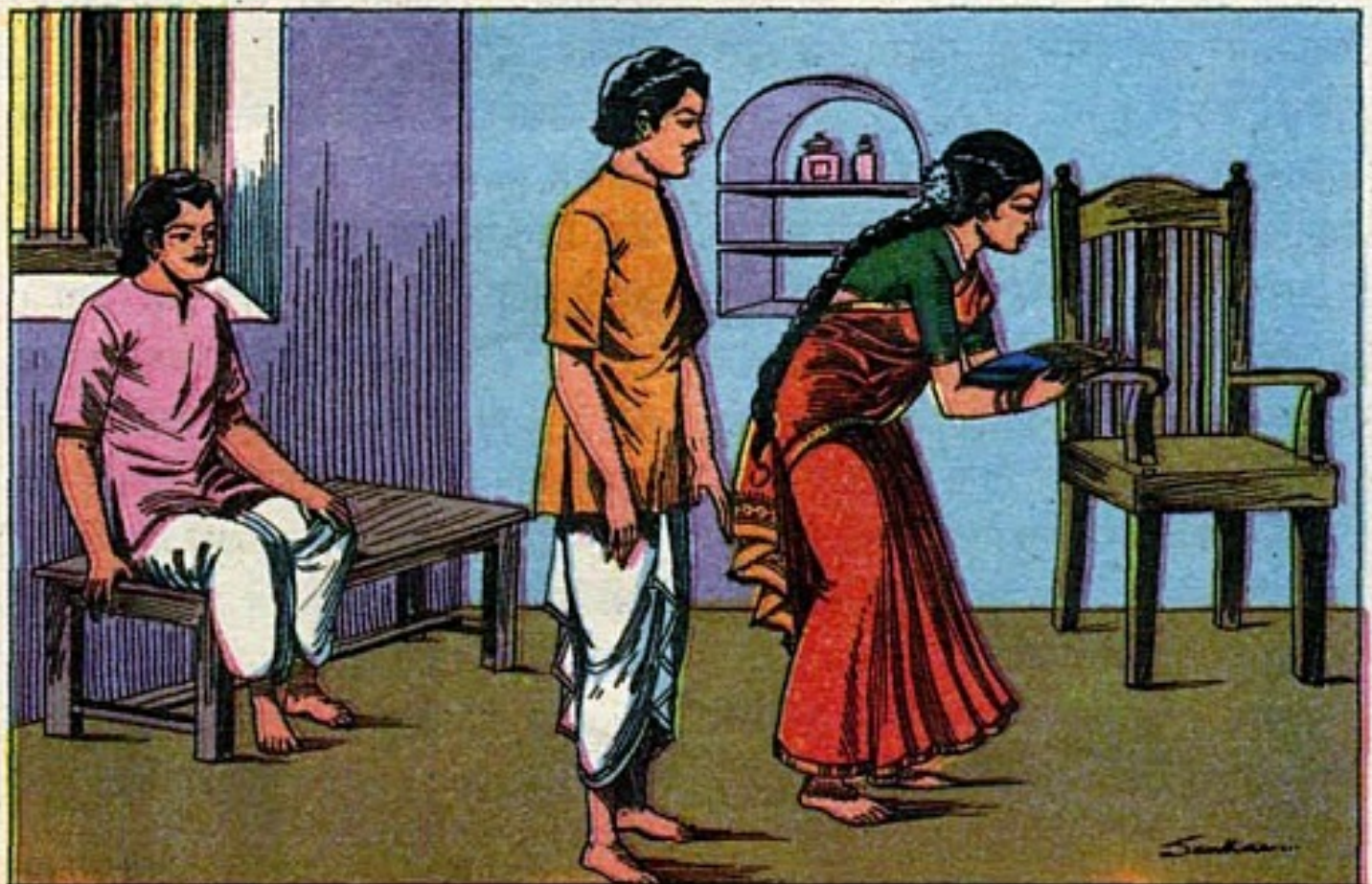
नहीं आयी । आधी रात हुई तो उसे प्यास लगी । वह पानी पीने रसोई घर की ओर बढ़ा । पर वहाँ उसने जो नज़ारा देखा, उसे देखकर वह चौंक गया ।

रात को तो भारती ने सब के साथ मिलकर खाना खाया ही था । अब वह सास जी के नाम पर परोसकर रखी थाली पर अपना हाथ साफ कर रही थी । शिवदेव चुपके से वहाँ से लौट आया ।

अगली रात जब वे तीनों खाना खाने के लिए बैठे तो शिवदेव एकाएक अपनी जगह से उठा और बोला, "अरे आप, आप मौसाजी! आइए, आइए, विराजिए!"

सुभाष ने शिवदेव की ओर देखा, पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया । इस पर उसने शिवदेव से पूछा, "किसी से बात कर रहे हो, शिव? यहाँ तो कोई दिखाई नहीं दे रहा?"

शिवदेव अपनी पहले वाली मुद्रा बनाये रहा और बोला, "क्या आप सचमुच कुछ भी देख नहीं पा रहे हैं? आपके पिताजी आये हैं? उनका देहांत हुए कितने बरस हो गये!"

फिर वह अपनी थाली के सामने बैठ गया और बोला, "आप भी बैठिए न! अभी आपकी बहू आपके लिए खाना परोसती है । वह बहुत बढ़िया खाना बनाती है ।"

भारती को इस सब पर जैसे कि विश्वास न हुआ । फिर भी उसने आश्चर्य चकित होते हुए वहाँ एक थाली परोसकर ला रखी ।

शिवदेव ने फिर प्रश्न किया, "कैसे हैं, मौसाजी? आप उदास से क्यों दिख रहे हैं?"

सुभाष से अब रहा न गया । वह शिवदेव से बोला, "पिताजी को क्या तकलीफ है, शिव?

"जीजाजी," शिवदेव बोला, "मौसाजी कहते हैं, क्योंकि आपकी माताजी यहीं हैं, वह उन्हें लिवाने आये हैं । कहते हैं अब दोनों ऊपरी लोक में ही रहेंगे । वहीं ठीक रहेगा । वह कहते हैं अब रवाना होने का वक्त भी आ गया है । हाँ, और वह यह भी कहते हैं कि आइंदा आपकी माताजी किसी को दिखाई नहीं देंगी । इसलिए उनकी बहू, यानी भारती को, दुखी नहीं होना चाहिए । वे आप दोनों को आशीर्वाद दे रहे हैं और जा रहे हैं ।"

"ओह, यह बात है!" सुभाष परेशान हो उठा, "पिताजी ने हमेशा ऐसे ही किया है ।

वह बहुत ही जल्दबाज़ हैं ।''

भारती का चेहरा फ़क पड़ गया था । उस पर हवाइयाँ उड़ रही थीं । पर वह स्थिति को समझने की कोशिश कर रही थी ।

अगले दिन सुबह ही शिवदेव वहाँ से निकल पड़ा । भारती जब उसका बिस्तर समेट रही थी तो उसे एक पर्चा मिला, जिस पर लिखा था: ''तुम मेरी सगी बहन हो । इसीलिए तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ । सुभाष अपनी माँ को बहुत चाहता है । तुम ने अपने स्वार्थ के लिए उस चाहत का खूब मज़ाक उड़ाया । तुमने अपने पेटूपन से निपटने के लिए बढ़िया तरीका खोज निकाला । बढ़िया नाटक है यह! सास के प्रति प्रेम जताकर तुम सुभाष से कुछ भी करवा रही हो! वह तुम पर अंधा-धुंधा खर्चा कर रहा है, चाहे उसे कर्ज ही क्यों न उठाना पड़े । पर घर आये सगे भाई को रफा-दफा करने के लिए भी तुम ने सास के नाम का अच्छा उपयोग किया । तुम्हारे ढोंग को मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ । इसीलिए मैंने इसे खत्म करने के लिए तुम्हारे ससुर वाला ढोंग रचा । नहीं रचता तो एक-न-एक दिन तुम्हारी पोल-पट्टी खुल जाती और तुम्हें अपमान सहना पड़ता । जो कुछ मैं ने किया है; तुम्हारी भलाई के लिए किया है । आशा है तुम मुझे समझोगी और मुझ पर गुस्सा नहीं करोगी । अगले त्योहार के अवसर पर मैं तुम दोनों को न्योता दूंगा । आने से आना-कानी नहीं करना!''

पत्र पढ़कर भारती की आंखें खुल गयीं । उसे अपनी स्वार्थ-सिद्धि पर अफसोस हुआ । वह एकदम उदास हो गयी ।

''क्या बात है? किस सोच में डूबी हो?'' सुभाष ने भारती से प्रश्न किया ।

''कुछ नहीं । हमारी शादी के बाद पहली बार मेरा भाई यहाँ आया था । हमें चाहिए था कि हम उसे नये कपड़े भेंट करते । बड़ी भूल हो गयी । अगले त्योहार पर जब हम भैया और भाभी के पास जायेंगे तो उनके लिए बढ़िया-सी सौगात लेकर जायेंगे ।'' भारती के स्वर में अब खुशी झलक आयी थी ।

मूर्खता रंग लायी

हलकू एक ग़रीब लकड़हारा था । एक दिन वह दोपहर के वक्त नदी से पानी पीकर लौट रहा था कि उसे रेत में कोई चमकती चीज़ दीख पड़ी । हलकू ने उसे उठा लिया और उसे गौर से देखने-परखने लगा ।

इतने में एक जौहरी उधर से गुज़रा । हलकू के हाथ में जब उसने वह चमकती हुई चीज़ देखी तो उसको लेकर उसने भी उसे जांचा-परखा और फिर हलकू से बोला, "यह तुम मुझे दे दो । इसके बदले मैं तुम्हें बीस रुपये दूंगा ।"

हलकू समझ गया कि ज़रूर यह कोई उपयोगी चीज़ है, वरना यह आदमी इसे इतनी कीमत देकर खरीदने को तैयार क्यों होता! इसलिए वह जौहरी से बोला, "बीस रुपये! बस! आप तो बहुत कम दाम दे रहे हैं । कम से कम तीस रुपये तो दें ।"

"पागल मत बनो," जौहरी बोला, "कांच के इस छोटे से टुकड़े के भला तीस रुपये कौन देगा! चलो, पच्चीस ले लो!"

पर हलकू अपनी बात से टस से मस न हुआ । वह बड़ी ठसक से बोला, "तीस रुपये से एक कौड़ी भी कम नहीं होगी!"

जौहरी ने सोचा इस सुनसान जंगल में इसे दूसरा कौन मिलेगा जो इसे इतना दाम देगा । इसलिए उसे समझाते हुए बोला, "लालच मत करो । लालच बुरी बला है । अभी मैं पार के गाँव में जा रहा हूँ । इस बीच तुम सोच लो । पच्चीस रुपये लेने हों तो मैं तैयार हूँ । वैसे, इसके अगर कोई तुम्हें दस रुपये भी दे दे तो ग़नीमत समझना ।"

जौहरी को उस गाँव में ज़्यादा वक्त नहीं लगा । वह लौटा तो हलकू से बोला, "अब सोच-समझ लिया न! यह लो पच्चीस रुपये और वह मुझे दे दो! वक्त हाथ से निकल गया तो पछताओगे!"

"पर मैंने तो उसे बेच दिया है?" हलकू ने बिना ज़्यादा सोचे उत्तर दिया ।

"बेच दिया है?" जोहरी दंग रह गया, "कितने में?"

"सौ रुपये में!" हलकू ने मासूमियत से जवाब दिया ।

"मूर्ख हो!" जौहरी एकाएक बोला, "वह तो दस हज़ार रुपये की कीमत का एक कीमती हीरा था!"

"तो आप महामूर्ख हैं!" हलकू ने तड़ाक से जवाब दिया ।

"कैसे?" जौहरी ने हैरत दिखायी ।

"आपने पांच रुपये बचाने की खातिर दस हज़ार रुपये का हीरा गंवा दिया!" हलकू की हाज़िरजवाबी बरकरार थी ।

हलकू का उत्तर सुनकर जौहरी अपना-सा मुंह लेकर वहाँ से चलता बना ।

—प्रेम भटनागर

अपूर्व के पराक्रम

३

(एक नन्हा-सा मानव है अपूर्व । उसके पास अलौकिक शक्ति है, क्योंकि हिमालय में रह रहे मुनि सदानंद के तपोबल से उसका इस धरती पर आविर्भाव हुआ है । वह धरती के दुखी जन के कष्ट दूर करना चाहता है । पहले उसने एक गाँव के गरीब लोगों को ज़मींदार के प्रताडन से बचाया, फिर समीर नाम के एक बालक को डाकुओं के चंगुल से छुड़ाया । —अब आगे पढ़िए ।)

गाँव के लोगों ने जैसे ही समीर को देखा, वे उसकी ओर दौड़ते हुए आये । उस की माँ भी उन में थी और उस ने उसे अपनी भुजाओं में ले लिया और उसे अंधा-धुंध वह चूमने लगी । उस समय उस माँ की आंखों से आंसुओं की धाराएँ बह रही थीं ।

"तुम उस ज़ालिम भैरव से कैसे बच पाये?" गाँव के मुखिया ने समीर को अपने गले से लगाते हुए पूछा ।

"हमारा समीर बहादुर ही नहीं है, बहुत समझदार भी है । इसी लिए तो वह उन ज़ालिम डाकुओं से बचकर जिंदा रह सका, यह मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ," गाँव के एक दूसरे प्रमुख व्यक्ति का कहना था ।

वहाँ मौजूद दूसरे लोगों ने भी सहमति में अपना सर हिलाया । लेकिन समीर ने अपने हाथ जोड़ते हुए कहा, "अगर आज मैं मौत के मुंह से बचा हूँ तो वह अपनी बहादुरी या समझदारी से नहीं, बस ईश्वर की मर्ज़ी से हुआ । उसने अपना एक फरिश्ता भेजा था

जिसने ने अपनी अपूर्व बुद्धि, चातुरी और समझदारी से मेरी जान बचायी । उसके बारे में बाद में बताऊंगा । डाकुओं ने दरअसल, कई लोगों की जान ली है । अगर मैं बच भी गया हूँ तो वह काफी नहीं है ।''

''तुम ठीक कहते हो, बेटा । पर अगर एक भी उनके जाल से बच निकला है तो हमें खुशी है । तुम तो जानते ही हो कि इन डाकुओं का सामना करना हमारे बूते का नहीं । यह बात हम सपने में भी सोच नहीं सकते कि इन ज़ालिम-खूंख्वार डाकुओं का हम आम लोग सामना कर पायें, उन्हें पकड़वा सकें । हम लाचार-कमज़ोर दुखियारे हैं उन के सामने । और तो और, राजा के अधिकारी और सैनिक भी उन्हें कुचल नहीं पाये हैं,'' गाँव के मुखिया ने उदासी के स्वर में कहा ।

''हर चीज़ का अंत होता है, बाबा । डाकुओं के आतंक का भी एक दिन अंत होगा । यह बराबर चल नहीं सकता । अब वक्त आ गया है कि राजा के सैनिक अपनी कार्रवाई पूरी करें । मैं चाहता हूँ कि अब वे मेरे साथ चलें । मैं उन्हें समूचा गिरोह पकड़वा दूंगा । सैनिकों को तो केवल मेरे साथ आकर, उन्हें अपने काबू में लेना है,'' समीर ने मुखिया को समझाते हुए कहा ।

समीर के मुंह से निकले इस प्रकार के अज़ब शब्द सुनकर वहाँ उपस्थित गांववाले सब के सब ताज्जुब में पड़ गये ।

एक सैनिक टुकड़ी के कप्तान ने भी समीर की ये बातें सुनी थीं । वह टुकड़ी गाँव में ही ठहरी हुई थी । उन शब्दों को सुनकर कप्तान भौंचक रह गया । क्या बालक पगला गया है! लेकिन गाँव का मुखिया तो समीर को अच्छी तरह जानता था । वह समझता था कि समीर अगर डाकुओं के चंगुल से बच निकला है तो इससे उसका सर नहीं फिर गया है और न ही वह अनाप-शनाप बकने लगेगा ।

''तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि तुम जानते हो, डाकू कहाँ रह रहे हैं? माना तुम हमें वहाँ ले जाओगे, पर इसका क्या भरोसा कि इस बीच वे कहीं और न पहुँच गये हों!'' मुखिया ने प्रश्न किया ।

''और अगर हमने उन्हें ढूंढ़ भी निकाला, तो तुम्हारा क्या ख्याल है—हमारी यह छोटी-सी टुकड़ी उतने बड़े उस गिरोह का

मुकाबला कर पायेगी? उनके पास तो हथियार भी बहुत होंगे!" कप्तान ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए पूछा ।

"जनाब, यह सब मैं भी जानता हूँ । लेकिन इस वक्त तो डाकू हमारे शिकंजे में हैं । और तो और, अब वे हमारे ऊपर हमला भी नहीं बोल पाते, क्योंकि उन्हें तो अपनी होश भी नहीं होगी," समीर का उत्तर था ।

समीर की बात सुनकर कप्तान का चेहरा खिल उठा । उसने आनंद से उछलकर अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे तुरंत समीर के पीछे-पीछे हो लें ।

"बेटे, जंगल में फिर जा रहे हो, जाने से पहले कुछ खाते तो जाओ । तुम्हें ज़ोरदार भूख भी लग रही होगी और तुम थके हुए भी होगे," समीर की माँ ने समीर को किसी तरह रोकना चाहा ।

"माँ, मैं ज़रूर अब भूखा-प्यासा हूँ, लेकिन अब मैं न कुछ खा पाता और न कुछ पी पाता । तभी ठीक से मैं कुछ खा-पी पाऊंगा जब मैं अपना काम पूरा कर लूंगा । देर करने से यह मौका हाथ से निकल जायेगा, ऐसे महान मौके बिरले ही आते हैं, माँ" समीर का उत्तर था ।

अब समीर आगे-आगे चल रहा था । कप्तान भी उसके साथ-साथ चल रहा था । सैनिक, गाँव का मुखिया और गाँव के लोग उनके पीछे-पीछे चल रहे थे । गांव के लोगों के हाथों में लाठियाँ थीं ।

उनकी चाल में बड़ा जोश था । पर वे संभलकर चल रहे थे । जिस घाटी में डाकू

रुके हुए थे, वह अब उन्हें साफ-साफ दीखने लगी थी । समीर ने अपने साथियों को वहीं रुक जाने को कहा और वह खुद एक चट्टान पर चढ़ गया । वाह! खूब! वह मुस्कराया, क्योंकि डाकू अब तक भी सोये पड़े थे । उनमें से कुछ खर्राटे ले रहे थे ।

समीर से इशारा पाकर कप्तान और गाँव का मुखिया भी उस चट्टान पर आ गये । कप्तान से आदेश पाकर सैनिकों ने कुछ बेलों को काटकर उन्हें मज़बूत रस्सों में बट लिया । फिर उन्होंने उन रस्सों से उन डाकुओं की मुश्कें कसनी शुरू कर दीं ।

सब से पहले अपनी आँखें खोलने वालों में भैरव सरदार ही था । जैसे ही उसकी-दृष्टि कप्तान पर पड़ी, वह अपनी आंखें

कप्तान ने ज़ोर का एक झापड़ उसके मुंह पर दिया और फिर गुर्राया, "खबरदार, ऐसी हरकत तुमने फिर की तो तुम्हारी बत्तीसी बाहर निकाल दूँगा।" इस बार उसने उसके सर पर एक चपत जमायी और बोला, "भैरव, तुमने सैकड़ों स्त्री-पुरुषों को यातनाएँ दी हैं। तुमने उन्हें छुरों से बींधा है। तुमने लाठियों से मार-मार कर उन्हें सुलाया है। अब हमसे कैसी दया की उम्मीद करते हो? अब अगर तुमसे रत्ती भर भी कोताही हुई तो समझ लो, तुम्हारा धड़ शरीर से अलग हो जायेगा। तुम्हारे साथियों को भी मौत के घाट उतारते हुए हमें ज़रा-सा भी संकोच नहीं होगा। इसलिए समझदारी से काम लो और चुपके से हमारे साथ चल पड़ो। ऐसे ही जैसे ढोर-डंगर चुपके-चुपके चलते रहते हैं। मेरी बात तुम्हारे पल्ले पड़ रही है न?"

कप्तान की कड़कती आवाज़ वहाँ पहाड़ियों में गूंज रही थी।

अब तक गिरोह के सभी डाकू उठकर बैठ गये थे। उनके हाथ तो पीछे बंधे थे और उनपर कप्तान की आवाज़ बिजली की तरह गरज कर उनके कानों को बेध रही थी। इसलिए वे भी समझ गये थे कि खेल खत्म हो चुका है।

कप्तान के सहायक ने उनपर अब कोड़े बरसाने शुरू कर दिये थे और उन्हें आदेश सुनाया था कि वे उठकर खड़े हो जायें। फिर उन्हें चलने को कहा गया। उन में से कुछ तो

मिचमिचाने लगा। वह एकदम ठगा-सा रह गया था।

"उठो रे, बदमाश! अब चलो हमारे साथ। अगर तुमने किसी तरह की भी आना-कानी की तो तुम्हें हम इन चट्टानों और कांटों के बीच से घसीटते हुए ले जायेंगे। और अगर तुम्हारा कोई अंग टूटकर यहीं रह गया तो हमें कोई चिंता नहीं होगी। राजा के सामने पेश करने के लिए तुम्हारा सर ही काफी होगा," कप्तान गरजा।

भैरव को यह समझते ज़्यादा देर नहीं लगी कि वह और उसके साथी, सब बंदी बना लिये गये हैं। एक बार में अपने स्वाभाव के अनुसार उसने रस्से को अपने दांतों से काट देना चाहा ताकि वह मुक्त हो सके, लेकिन

अब भी ऊंघ की चपेट में थे । लेकिन सैनिक उन पर कोड़े पर कोड़े बरसाये जा रहे थे ।

जंगल पार कर चुके वे समीर के गांव में पहुँचे । इस तमाशे को देखने के लिए वहाँ हज़ारों की संख्या में लोग पास के गांवों से आ जुटे थे । डाकू पैदल ही घिसटते चले आ रहे थे । उनके सर झुके हुए थे । जिन गाँव वालों को उन्हों ने सताया था, वे अब आगे बढ़कर उनसे बदला लेना चाह रहे थे । लेकिन समीर ने उन्हें रोका ।

"इनके भाग्य का फैसला हमारा कानून करेगा! इनकी भय तो अब वैसे काफी हो चुकी है । इन पर तो अब हमें दया खानी चाहिए," समीर ने कहा

गाँव वालों ने समीर को खुशी से ऊपर उठा लिया । फिर समीर, कप्तान और उसके सैनिकों को उस गांव में गांव के मुखिये के घर शानदार भोज दिया गया ।

अब समीर एक पेड़ के नीचे खड़ा था । तभी उसे एक सीटी सुनाई दी । सीटी की आवाज़ में कुछ ऐसा जादू था कि जिस दिशा से आवाज़ आयी थी, समीर उधर अपने को देखने से रोक न सका । वह खुशी से बांवला हुआ जा रहा था, क्योंकि उससे कुछ ही दूर, एक झाड़ी के पीछे अपूर्व खड़ा था– वही अपूर्व जिसने उसकी जान बचायी थी ।

समीर उसकी ओर लपककर बढ़ने को ही था कि अपूर्व ने इशारे से उसे मना किया । वह यह कतई नहीं चाहता था कि दूसरों को उसके बारे में कुछ भी पता चले । समीर

थोड़ी देर के लिए रुका रहा । फिर वह दूसरों की नज़र बचाकर, धीरे से अपूर्व के पास पहँचा और बोला, "मैं बेहद खुश हूँ ।"

"मैं भी बेहद खुश हूँ कि वे दुष्ट डाकू बंदी बना लिये गये हैं । लेकिन हालांकि वे दुष्ट हैं, पर उन्हें भी दूसरों की तरह भूख-प्यास लगती है । अपने गाँव के मुखिया से कहो कि उन्हें खाने को दे," अपूर्व ने समीर को सुझाव दिया ।

"क्यों नहीं, ऐ महापुरुष!" समीर बोला ।

"मुझे मित्र कहो । महापुरुष या फरिश्ता नहीं!" अपूर्व ने उत्तर दिया ।

* * *

डाकू जेल में बंद थे । उनके हाथ ही नहीं, उनकी टांगें भी सांकलों से जकड़ी हुई थीं ।

उन्हें बहुत कम खाने को दिया जाता था । बस, उतना ही, जिस से वे उन्हें जिंदा रखा जा सके ताकि उन्हें फांसी पर लटकाया जा सके ।

हाँ, सभी डाकुओं को फांसी की सज़ा मिली थी । राजा का यही आदेश था ।

भैरव, यह जब तुम्हारे कारण हुआ कि आज हमारी ऐसी दुर्दशा हो रही है!'' अब एक डाकू अपने को कहने से रोक न सका ।

''तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मुझे भैरव कहकर बुलाओ! तुम भूल गये कि मैं तुम्हारा मुखिया हूँ? तुम भूल गये कि तुम मुझे 'सरदार' कहकर पुकारा करते थे और जब कभी मैं तुम्हें बुलवा भेजता था तो तुम थर-थर कांपने लगते थे?'' भैरव दहाड़ा ।

''मैं सब कुछ भूल गया हूँ, सिवाय इसके कि हम जब मौत के कगार पर पहुँच गये हैं, और वह भी तुम्हारी वजह से, सिर्फ तुम्हारी ही वजह से । अरे मूर्ख, तुम समझते हो कि हम अब भी तुम्हें वही इज़्ज़त देंगे?'' डाकू ने उसे फटकारते हुए कहा ।

''बको मत! मैं तुम्हें अभी जान से मार डालूंगा!'' भैरव ने चीखते हुए उसे धमकाने की कोशिश की ।

''तुम्हें यह तकलीफ उठाने की ज़रूरत नहीं; मैं और तुम सूली पर तो चढ़ेंगे और जान से मार दिये जायेंगे भी!'' वह डाकू तड़ाक से बोला ।

भैरव गुस्से से अपने दांत पीसकर रह गया । उसे गहरा सदमा पहुँचा था । जब उसका एक साथी उसे फटकार रहा था तो दूसरे साथी उसे इस तरह मुंह बाये देख रहे थे । इसका मतलब तो यह हुआ कि ये सब एकमत हैं और उसे फटकार देने वाले का ही साथ दे रहे हैं!''

''क्या तुम लोग मौत से बचना चाहते हो?''

किसने यह प्रश्न किया था! लेकिन प्रश्न करने वाले की आवाज़ न केवल बड़ी मधुर थी, बल्कि उसमें एक प्रकार की शक्ति-सी थी जिससे सभी अभियुक्तों में आशा जगी ।

''कौन है यह?'' भैरव ने जानना चाहा । उसकी दृष्टि उस कोठरी के एक काले कोने पर गड़ी हुई थी ।

''मैं वही व्यक्ति हूँ जिसने तुम्हें पकड़वाया

है" आवाज़ फिर आयी ।

"अगर तुमने हमें पकड़वाया है तो अब हमें मौत से छुड़ाकर क्या साबित करना चाहते हो?" भैरव ने प्रश्न किया ।

"मेरी खुशी किसी अपराधी की मृत्यु में नहीं, बल्कि उसके नये जन्म में है । तुम्हारा पकड़ा जाना ज़रूरी था, क्योंकि जिस तरह का जीवन तुम बिता रहे थे, वह पाप से भरा था । तुम दूसरों को दुःख दे रहे थे, पर अपने को भी बरबाद किये जा रहे थे । तुम नहीं जानते कि तुम किस नरक में अपनी आत्माओं को झोंक रहे थे! अगर तुम्हारा तौर–तरीका यही रहता तो तुम्हारा जीना बेकार था," वह आवाज़ फिर उभरी । कहने की ज़रूरत नहीं, कि वह अपूर्व ही था ।

डाकू कुछ देर तक खामोश रहे । फिर उनमें से कई याचना करते हुए बोले, "हम पर कृपा करो । हमें ज़िंदा रहने दो । हम अपना तौर-तरीका बदलेंगे । आप जो कहेंगे, हम वही करेंगे । हम नेक इंसान बनेंगे । हम आगे के दिन शांति से गुज़ारते रहेंगे । हम वादा करते हैं ।"

"भैरव सरदार का क्या कहना है?" अपूर्व ने जानना चाहा ।

पहले हलकी-सी आवाज़ और फिर एक सिसकी सुन पड़ी । भैरव रो रहा था । फिर वह बोला, "एक बार मैंने शांतिपूर्ण ढंग से जीना चाहा था । लेकिन धीरे-धीरे मैं इस अपराध की दुनिया में चला आया । अगर आप मुझे वाकई बचा सकते हैं तो हम अपना जीवन आपको अर्पित कर देंगे!"

"अपना जीवन अपनी आत्मा को अर्पित करो । वही काफी है," अपूर्व ने उत्तर दिया । "तुम्हारी आत्मा ईश्वरीय ज्योति है । एक बार यदि तुम इसे पा गये, तो यह तुम्हें कभी भटकने नहीं देगी ।"

"मुझे अपनी कोई चिंता नहीं । यदि राजा मेरे दूसरे साथियों को क्षमा-दान दे दें तो मैं फांसी पर लटकने को तैयार हूँ," भैरव ने सच्चे मन से उत्तर दिया ।

"यह तुम्हारे भीतर परिवर्तन का पहला संकेत है । अब मेरी बात ग़ौर से सुनो । मैं राजा से तुम्हारी तरफ से वकालत करूँगा । परिणाम क्या होगा, मैं नहीं जानता । तुम इस बीच प्रार्थना करते रहो । ईश्वर से क्षमा

मांगो। वही तुम्हें बचा सकता है," अपूर्व ने उसे समझाया।

* * *

अपूर्व ने समीर को हिदायत दी कि वह राजा से डाकुओं के क्षमा-दान के लिए वकालत करे। समीर ने वैसा ही किया, लेकिन उसकी अपील नामंज़ूर कर दी गयी। राजा का कहना था कि इन लोगों ने अनेक लोगों की जान ली है, इसलिए इनकी भी जान ली जानी चाहिए। पर समीर के प्रति उसका भाव बहुत ही उदार था।

"राजन्, मुझे ऐसा लग रहा है कि ईश्वर ने उन्हें क्षमा का दिया है। वह संभवतया इन्हें नया जीवन शुरू करने का एक और अवसर देना चाहता है।" समीर ने दलील पेश की।

"क्या तुम ईश्वर की ओर से बोल रहे हो?" राजा ने उससे मज़ाक किया।

"नहीं, राजन्, मैं नहीं, वह फरिश्ता बोल रहा है जिसने मुझे डाकुओं से बचाया था।" समीर ने उत्तर दिया।

"देखो, यदि ईश्वर इन्हें बचाना चाहता है तो वह कोई चमत्कार करेगा," राजा ने कहा।

"डाकू पश्चात्ताप कर रहे हैं। उनका हृदय-परिवर्तन हो चुका है। क्या यह एक चमत्कार नहीं है?" समीर ने विनम्रता से प्रश्न किया।

"हो सकता है। लेकिन मैं इसे काफी नहीं समझता। ईश्वर उस रस्से पर बिजली भी तो गिरा सकता है जिससे हम भैरव को फांसी देने जा रहे हैं।" राजा ज़ोर से हंसा। फिर उसने समीर की पीठ थपथपायी और उसका ढाढ़स बंधाया।

समीर को निराशा हुई। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने सारी बात ज्यों की त्यों अपूर्व तक पहुँचा दी।

अपूर्व ने उस बात पर विचार किया। फिर बोला, "राजा जिस तरह का चमत्कार चाहता है, वह भी हो जायेगा!" (जारी)

कार्य-कुशलता की पहचान

दृढ़ प्रतिज्ञ राजा विक्रम फिर उस पेड़ की ओर बढ़ चले। पेड़ पर लाश पहले की तरह ही लटक रही थी। उसे उन्होंने वहाँ से उतारा और अपने कंधे पर लगा लिया। फिर वह पहले की तरह मौन धारण किये श्मशान में चलने लगे। तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "हे राजन्, आप किसका आदेश पालन कर के इस सुनसान रात को इस भयावह श्मशान में इस तरह कष्ट उठाकर घूम रहे हैं, मैं नहीं जानता। यह काम वही कर सकता हैं जिसमें अटूट स्वामीभक्ति एवं असाधारण धैर्य और साहस हैं और जो अपने विवेक को खोये नहीं। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि विवेकवान और कार्यकुशल व्यक्ति भी अपमान का शिकार होकर अपना मान-सम्मान और पद खो देता है। ऐसे ही एक भाग्यहीन गुप्तचर की कहानी मैं आपको सुनाना चाहता हूँ। आप उसे ध्यान से सुनें। इससे आपका ध्यान भी बंटा रहेगा और

बैताल कथाएँ

आपको थकान भी महसूस नहीं होगी ।"
इतना कहकर बैताल वह कहानी सुनाने लगा:

गिरिपुर का राजा धूमकेतु बड़ा क्रूर था । वह बहुत बड़ी आकांक्षा पाले हुए था । पड़ोस में ही कांभोज राज्य था । वहाँ बड़ी खुशहाली थी । धन-संपदा की कोई कमी न थी । धूमकेतु उसे हथियाना चाहता था । पर वह जानता था कि कांभोज को अपने राज्य में मिलाना कोई आसान काम नहीं । एक बार, इत्तफाक से कांभोज की राजकुमारी, मदालसा, अपनी सहेलियों के साथ धूमकेतु के राज्य में वनविहार के लिए चली आयी । धूमकेतु ने इस अवसर को अपने हाथ से जाने न दिया । उसने तुरंत अपने सैनिक भेजकर उसे गिरफ्तार करवा लिया । फिर उसने उसे किसी गुप्त कारावास में बंद करवा दिया ।

राजकुमारी को अपने कब्ज़े में कर लेने के बाद धूमकेतु ने अपने एक दूत के माध्यम से कांभोज के राजा को खबर भजवायी कि उसकी बेटी, मदालसा, अब धूमकेतु के कब्ज़े में है और यदि वह अपनी बेटी को सुकुशल वापस चाहता है तो उसे नज़राने के तौर पर, दस लाख अशरफियां भिजवा दे । उसने कांभोज के राजा को चेतावनी भी दी कि वह धूमकेतु के राज्य को छोटा समझकर उसपर चढ़ाई करने की हिमाक़त न करे, वरना उसे अपनी बेटी की लाश ही देखने को मिलेगी ।

पहले यह खबर कांभोज के वृद्ध मंत्री को ही मिली थी । उसने राजा तक इसे पहुँचाया और फिर दूत से बोला, "अपने राजा से कह दो कि हम उन्हें यह राशि एक महीने के भीतर भिजवा देंगे ।"

दूत तो लौट गया था, पर कांभोज के राजा का क्रोध अपने चरम पर था । "मान लिया कि हम वह राशि उसे भिजवा देते हैं । पर यह कैसे यकीन करें कि वह दुस्साहसी व्यक्ति हमारी बेटी को रिहा कर देगा?"

इस पर वृद्ध मंत्री ने उत्तर दिया, "प्रभु, हम उसे फूटी कौड़ी भी नहीं भिजवायेंगे ।"

विवश होकर राजा ने मंत्री से कहा, "ठीक है । अब बताओ हमें करना क्या चाहिए!"

"हम एक ऐसे स्वामीभक्त और कार्यकुशल गुप्तचर को धूमकेतु के राज्य में भेजेंगे जो इस बात का पता लगायेगा कि राजकुमारी को कहाँ रखा गया है । फिर हम

उसे रिहा करवाने की युक्ति सोचेंगे ।" मंत्री ने गंभीरता से उत्तर दिया ।

राजा और मंत्री के बीच मंत्रणा के बाद निर्णय यह लिया गया कि इस काम पर गुप्तचरों के नायक केशववर्मा को लगाया जाये । फिर यह निर्णय तुरंत केशववर्मा तक पहुँचा दिया गया ।

दूसरे दिन सबेरे-सबेरे ही केशववर्मा अपने राज्य से चल पड़ा और एक दिन, एक रात चलकर गिरिपुर राज्य के सीमांत पर पहुँचा । सीमांत पर एक नदी थी । वहाँ धूमकेतु का एक सैनिक शिविर था । केशववर्मा ने एक मछुए का वेश धारण किया और नदी पार करके गिरिपुर की राजधानी में जा पहुँचा । वह वहाँ एक सप्ताह तक रहा, और उसने राजकुमारी मदालसा का पता लगाने के लिए कई प्रयास किये । अखिर, उसे पता चल ही गया कि राजकुमारी को नदी किनारे के जंगल में एक पुराने किले में कैद करके रखा गया था ।

रात हुई तो केशववर्मा उस जंगल में जा पहुँचा और झाड़ियों में छिपकर किले का नक्शा समझने की कोशिश करने लगा । अचानक उसके सर पर जोर का प्रहार हुआ । केशववर्मा ने फौरन मुड़कर देखा । वहाँ एक सैनिक अपने एक हाथ में मशाल लिये खड़ा था और उसके दूसरे हाथ में कोई अस्त्र था । वह उस पर दूसरा वार करने ही जा रहा था कि केशववर्मा ने अपनी तलवार उस सैनिक के सीने में भोंक दी । चोट खाकर वह सैनिक जैसे ही नीचे गिरा, वैसे ही वह ज़ोर से चीखा । उसका चीखना था कि दूसरे सैनिक

वहाँ दौड़े चले आये ।

केशववर्मा ने वक्त हाथ से जाने नहीं दिया । उसने तुरंत मशाल सैनिक के हाथ से छीन ली और उस मशाल की मदद से उसने सूखे झाड़ों और पत्तों में आग लगा दी । देखते ही देखते आग की लपटें ज़ोर पकड़ने लगीं और वहाँ भगदड़ मच गयी । केशववर्मा के लिए वहाँ से बच निकलने का यही उपयुक्त अवसर था । छिपते-छिपते उसने गिरिपुर की सीमा पार की और दो-तीन दिन तक चलकर वापस कांभोज पहुँच गया ।

केशववर्मा के सर पर पट्टी बंधी हुई थी । उसे उस हालत में देखकर राजा और मंत्री, दोनों घबरा गये । केशववर्मा ने उन्हें जो कुछ बताया, उससे वे और भी घबराये ।

दूसरे दिन कृतसेन नामक एक युवा सैनिक उनके पास आया और उनसे बोला कि वह राजकुमारी को छुड़ाकर ला सकता है ।

कृतसेन की बात से राजा रत्ती-भर भी आश्वस्त नहीं हुआ, फिर भी उसने कहा, "अच्छा, ठीक है । तुम केशववर्मा से मिल लो और उससे पुराने किले के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लो ।"

"क्षमा करें, महाराज! केशववर्मा से मिलने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा," कृतसेन ने विनम्रतापूर्वक कहा ।

राजा और मंत्री चौंके । "क्यों?" राजा ने तुनककर पूछा ।

इस पर कृतसेन ने अपनी विनम्रता बनाये रखते हुए कहा, "मुझे शक है । वहाँ, किले के बाहर, इतनी हलचल हुई है । क्या तब भी राजा धूमकेतु ने राजकुमारी को वहीं बंदी बनाकर रख छोड़ा होगा?"

कृतसेन का उत्तर पाकर अब राजा और मंत्री को उसकी बुद्धि की दाद देनी पड़ी । राजा उससे बोला, "ठीक है, हमारी आज्ञा है । तुम अपनी तैयारी करो और अपना काम पूरा करने के लिए निकल पड़ो ।"

चार दिनों बाद कृतसेन वापस आ गया । उसके साथ राजकुमारी नहीं थी । वह अकेला ही था । उसे इस तरह आया देख राजा आग-बबूला हो गया । वह चिल्ला कर बोला "तुमने अकेले लौटने की हिम्मत कैसे की? इससे अच्छा तो यह होता कि तुम वहीं खत्म हो जाते!"

कृतसेन पहले की ही तरह विनम्र था। बोला, "महाराज क्षमा करें। धूमकेतु ने राजकुमारी को अब एक टापू में बंदी बनाकर रखा है। वह टापू, जहाँ नदी सागर में मिलती है,वहीं है। वहाँ सैनिकों की कड़ी निगरानी है और सैनिकों की संख्या भी अधिक है। मैं अकेला भी वहाँ पहुँच सकता था, पर हो सकता है मेरी वहाँ मृत्यु हो जाती। इसीलिए मैं लौट आया।"

तुरंत राजाने सेनापति को बुलवा भेजा। सेनापति आया तो मंत्री ने उसे सारी स्थिति समझायी और उस से पूछा, "सीमा-पार की नदी जहाँ समुद्र में मिलती है, वहाँ एक टापू है। हमें पता चला है कि राजकुमारी को वहीं बंदी बनाकर रखा गया है। क्या यह संभव है कि वहाँ आक्रमण करके राजकुमारी को बचा लिया जाये?"

"संभव क्यों नहीं है, राजन्!" सेनापति ने राजा को संबोधित करते हुए कहा, "हम वहाँ मछुओं के वेश में जायेंगे। मेरे साथ चुने हुए सौ सैनिक होंगे। हम वहाँ चुपके से हमला करेंगे और राजकुमारी को छुड़ा लायेंगे।"

"ठीक है, आप अपना कार्य शुरू करें," वृद्ध मंत्री ने कहा। "जब आप को सफलता मिले तो हमें सूचना भिजवा दें। हम पूरी सेना के साथ गिरिपुर पर हमला कर देंगे।"

वाकई, वृद्ध मंत्री की योजना सफल रही। राजकुमारी को मुक्त करा लिया गया और धूमकेतु को बंदी बना लिया गया। गिरिपुर अब कांभोज के कब्जे में था।
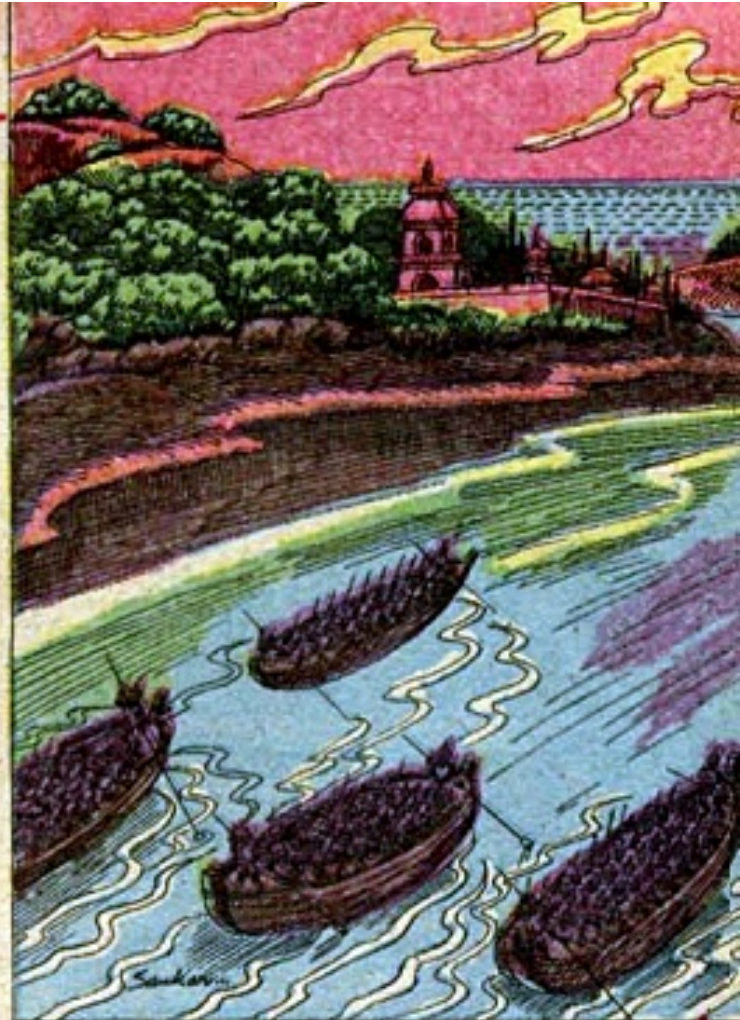
राजा तो बहुत ही खुश था। उसने मंत्री से कहा, "महामंत्री, हम इस अवसर पर केशववर्मा का सम्मान करना चाहते हैं। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

तुरंत मंत्री ने उत्तर दिया, "सम्मान का हकदार केशववर्मा नहीं, कृतसेन है!"

वृद्ध मंत्री का उत्तर सुनकर राजा पहले तो एकदम चौंका, फिर सहमति में अपना सर हिलाते हुए बोला, "आप ठीक कहते हैं।"

कृतसेन को खूब सम्मान मिला। केशववर्मा को गुप्तचर विभाग के प्रमुख के पद से हटाकर, कृतेसेन को उसके स्थान पर नियुक्त कर दिया गया।

बैताल ने कहानी खत्म कर ली थी।

बोला, "राजन्, कांभोज के राजा ने अपने मंत्री के कहने पर केशववर्मा की अवहेलना ही नहीं की, बल्कि उसे गुप्तचर विभाग से भी हटा दिया। क्या यह उसने ठीक किया? जिस कृतसेन को राजा ने स्वयं धिक्कारा था, उसी का सम्मान किया गया और फिर उसे गुप्तचर विभाग का प्रमुख नियुक्त कर दिया गया। क्या यह सब अविवेकपूर्ण और अटपटा नहीं लगता? यदि आप इन्हें समझते हुए भी स्पष्ट नहीं करेंगे तो आपका सर फट जायेगा।"

इस पर राजा विक्रम बोले, "केशववर्मा चाहे एक कार्यकुशल और स्वामिभक्त गुप्तचर था, पर उसके स्वभाव में क्रोध भी थी, और यह उसकी दुर्बलता थी। उसके क्रोध का ही परिणाम था कि उसने अपने बचाव में समूचे जंगल को ही आग लगा दी। उसे इस बात की भी होश न रही कि जिस राजकुमारी को वह मुक्त कराना चाहता है, वह भी वहीं, पास ही किले में बंद है और वह आग राजकुमारी तक भी जा पहुँचती! यानी, समस्या सुलझने के बजाय और उलझ गयी। धूमकेतु ने राजकुमारी को वहाँ उस किले से हटाकर उस टापू में भेज दिया। अब इस रहस्य का पता क्या कोई आसानी से लगा सकता था? इस का पता तो कृतसेन ने ही लगाया न! और फिर वह इस सब की जानकारी देने के लिए वापस अपने राज्य में आया ताकि राजा और मंत्री को वह यह सब बता सके। बाद में उसी की दी जानकारी के आधार पर मंत्री ने अपनी योजना तैयार की और न केवल राजकुमारी को मुक्त कराया, बल्कि धूमकेतु जैसे क्रूर और महत्त्वाकांक्षी राजा को अच्छा पाठ पढ़ाया। फिर मंत्री के सुझाने पर ही राजा ने यह बात भी समझी कि उनकी सफलता का श्रेय कृतसेन को है, न कि केशववर्मा को। इसलिए कृतसेन का सम्मान ठीक ही हुआ।"

राजा विक्रम के बोलने से उनका मौन भंग हो चुका था। बैताल लाश समेत वहाँ से ओझल हो गया। अब वह फिर पहले वाले पेड़ की उसी शखा से जा लटका था। (कल्पित)

(आधार: डॉ. ताटिचेर्ला की रचना)

पंखेवाला

एक राजा को पंखों से बहुत प्यार था। उसके पास तरह-तरह के पंखे थे।

एक दिन कड़ी दोपहरी में राजा भोजन करके आराम करने को ही था कि उसे राजभवन के बाहर किसी पंखेवाले की आवाज़ सुन पड़ी। वह चीख-चीखकर कह रहा था, "पंखे ले लो, अद्‌भुत पंखे!"

राजा ने उसे बुलवाया। "क्यों, कैसे पंखे हैं ये?" राजा ने प्रश्न किया।

"अद्‌भुत पंखे हैं ये, हज़ूर," पंखेवाला बोला।

"क्या विशेषता है इन पंखों की?" राजा ने फिर प्रश्न किया।

"ये सालों साल चलते हैं।" पंखेवाले ने उत्तर दिया।

राजा की भौंवें चढ़ीं। उस ने पूछा, "कीमत क्या है इन की?"

"सिर्फ पचास अशरफियां फी पंखा हुज़ूर! बहुत सस्ते हैं!" पंखेवाले ने उत्तर दिया।

"क्या कहा? पचास अशरफियां फी पंखा! और ऊपर से तुम कहते हो कि पंखे बहुत सस्ते हैं?" राजा की भौंवें चढ़ी रहीं।

"अन्नदाता, आप इन्हें आजमा कर देख सकते हैं। मैं झूठ कहूँ तो सज़ा का हकदार हूँ।" पंखेवाले ने उत्तर दिया।

राजा ने उससे एक पंखा ले लिया और उसे पचास अशरफियाँ दे दीं। फिर बोला, "ठीक है। हम पहले इसकी आज़माइश करेंगे।"

पंखेवाला बोला, "हुज़ूर, आज्ञा दें तो मैं इसके इस्तेमाल की विधि बता दूँ!"

"क्या बकते हो! क्या तुम समझते हो कि हमें पंखा इस्तेमाल करना भी नहीं आता? तुम जाओ अब, और एक महीने बाद आना। राजा ने उसे डांटते हुए कहा।

पंखेवाला चला गया। राजा आराम करने के लिए लेट गया और नये पंखे को अपने हाथ

अनूप किशोर दास

से स्वयं ही झलने लगा । पर पंखे में उसे कोई विशेषता नज़र नहीं आयी । इसी तरह एक हफ्ता बीत गया ।

एक दिन राजा आराम करते हुए ऐसे ही अपने को पंखा झल रहा था कि उसमें से कुछ पत्ते निकल कर गिर पड़े और फिर होते-होते सभी पत्ते गिर गये और राजा के हाथ में केवल पंखे की डंडी ही रह गयी ।

लेकिन पंखेवाला एक महीना बीतते ही बेधड़क राजा के सामने आ खड़ा हुआ और झुककर राजा को प्रणाम करते हुए बोला, "आपका आदेश था, हुज़ूर । लिहाज़ा मैं अब आपके दरबार में उपस्थित हूँ ।"

उसे देखते ही राजा का गुस्सा सातवें आसमान को छूने लगा । बड़ी खिन्नता से बोला, "तुम एक नंबर का ठग हो!"

"वह कैसे, हुज़ूर?" पंखेवाले ने आश्चर्य जतलाया ।

"क्या तुम अपने पंखे को अब भी पहचान सकते हो?" राजा ने व्यंग्य करते हुए कहा और फिर उसके सामने उसके पंखे की वह डंडी बढ़ा दी ।

पर इससे पंखेवाला घबराया नहीं । उसने कहा, "हुज़ूर, क्षमा चाहता हूँ । मैंने तो आपको पंखा देते समय कहा ही था कि इसे झलने की विशेष विधि है ।"

"वह क्या है?" राजा ने पूछा ।

"हुज़ूर, यह एक विशेष पंखा है । जैसा कि मैंने पहले कहा था, यह एक अद्भुत पंखा है । इसे काम में लाने का खास तरीका यह है कि इसे हाथ में लिये रहिए और अपना सर हिलाते रहिए । तभी इसकी विशिष्टता का पता चलेगा ।"

पंखेवाले का उत्तर सुनकर अब राजा हंसे बिना रह न सका । फिर वैसे ही हंसते हुए बोला, "पंखों संबंधी ज्ञान तो मेरा भी बहुत था, पर तुम तो मुझ से भी बाज़ी मार ले गये । तुम्हारे इस कौशल पर मैं बहुत खुश हूँ और तुम्हें अपने पंखों के रख-रखाव पर नियुक्त करता हूँ ।"

पंखेवाला वैसे ही अदब से अपना सर झुकाये खड़ा था ।

उनके सपनों का भारत

अपनी मातृभूमि के लिए अपने को अर्पित कर दो ।

भारत के स्वतंत्र-संग्राम की, अनेक नामी-गिरामी नेताओं ने अगुआनी की, लेकिन उनमें एक नेता ऐसा था जो जनता को विशेष रूप से प्रिय था । वह नेता और कोई नहीं, सरोजिनी नायडू थी, जो कि एक महान् नारी थीं । उसने भय को तो कभी जाना ही नहीं था । इसके साथ-साथ वह एक ऊंचे पाये की कवयित्री भी थी ।

सरोजिनी के पिता का नाम अघोरनाथ चट्टोपाध्याय था । वह हैदराबाद के निज़ाम कालेज में प्रधानाचार्य थे । सरोजिनी का जन्म १८७९ में हुआ था । जन्म से चाहे वह बंगाली ब्राह्मण थी, पर शादी उसने एक तेलुगु क्षत्रिय, डॉ॰ गोविंदराजुलु नायडू से की । इस तरह वह अपने समूचे आचार-विचार में प्रगतिशील थी । १९२५ में वह राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षा चुनी गयी ।

सरोजिनी नायडू जहाँ कहीं भी गयी, उसने लोगों को भारत की महानता और उसकी पुरातन सभ्यता के गौरव की याद दिलायी । अपने राजनीतिक जीवन के शुरू में उसने जो शपथ ली और जिसे वह चाहती थी कि दूसरे लोग भी लें, वह यह थी:

"मेरे साथ खड़े होकर, इन सितारों और पहाड़ियों को हाज़िर-नाज़िर जानकर, अपना जीवन, अपनी क्षमताएँ, अपना गान, अपना वाक्, अपने विचार, अपना आकर्षण सब मातृभूमि को अर्पित कर दो ।"

क्या तुम जानते हो?

१. एक जगह ऐसी परंपरा है कि वहाँ नर शिशु के जन्मते ही उसे भावी शिकारी और योद्धा मान लिया जाता है । कहाँ?

२. विश्व में सब से ऊंचा जलप्रपात कहाँ है?

३. 'द क्वीन ऑफ डेक्कन' तथा 'डेक्कन क्वीन' में क्या अंतर है?

४. वेनिस में गोंडोला किस्म की नौकाएँ देखी जाती हैं । इसी प्रकार की नौकाएँ भारत में कहाँ देखने को मिलती हैं?

५. श्रावणबेलगोल में गोमटेश्वर की मूर्ति और दिल्ली की कुतुब मीनार, इन दोनों की ऊंचाई में क्या अंतर है?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)
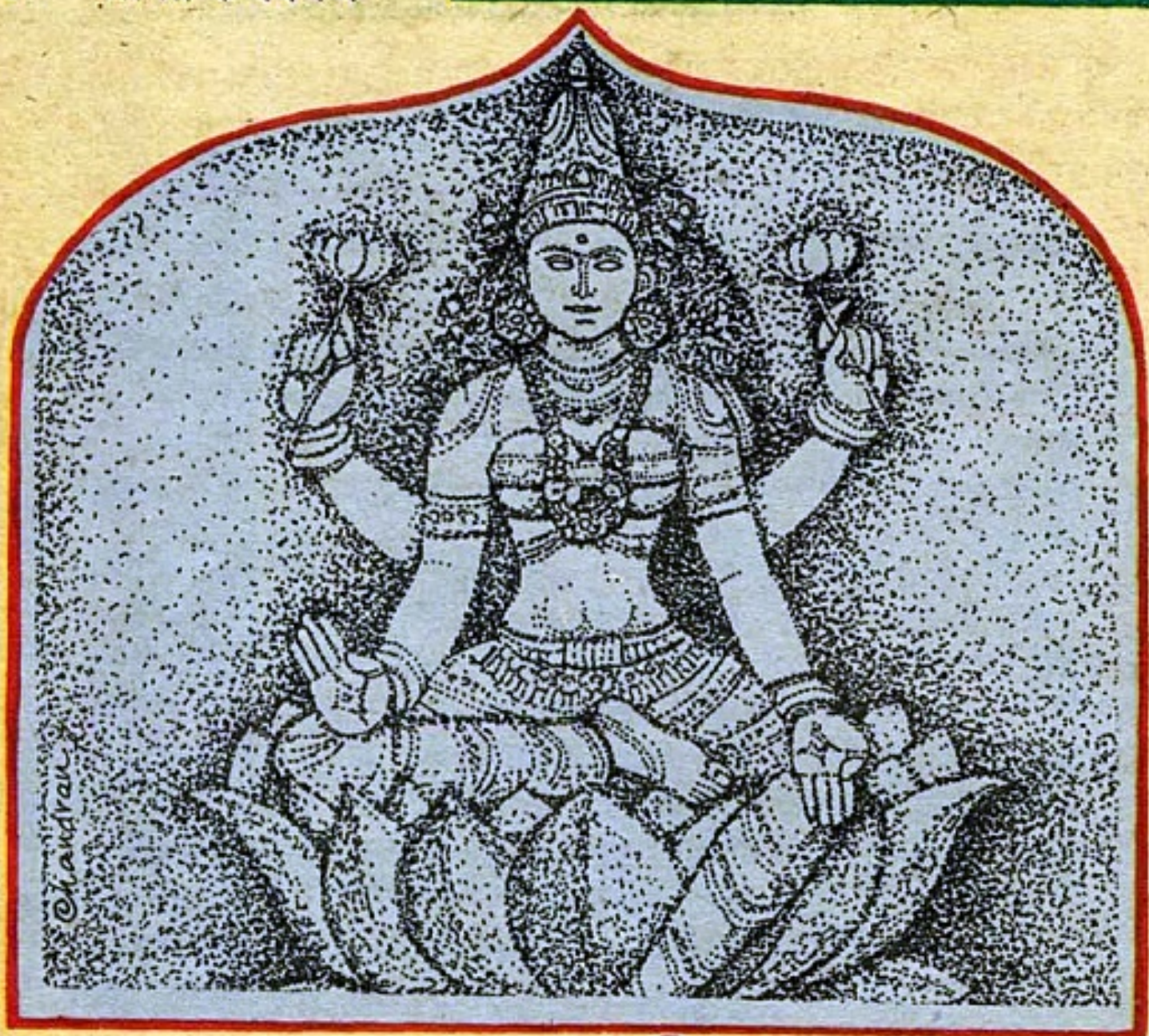
लक्ष्मी

देवताओं और दानवों ने जब समुद्र का मंथन किया तो उस में से ढेरों बहुमूल्य वस्तुएं निकलीं। उन दिव्य वस्तुओं के साथ देवी लक्ष्मी का भी आविर्भाव हुआ।

लक्ष्मी की पूजा धन-वैभव की देवी के रूप में की जाती है, लेकिन उसका साम्राज्य केवल लौकिक वैभव तक ही सीमित नहीं है। वह सच्चा वैभव प्रदान करती है—और वह वैभव है भीतरी खुशहाली का। दूसरे शब्दों में उसकी कृपा से ऐसा सुख मिलता है जो ईश्वरी शक्ति में पूर्ण रूप से विश्वास करने से ही प्राप होता है।

लक्ष्मी को नारायण या विष्णु की संगिनी माना जाता है। उसका एक नाम श्री भी है। इसीलिए विष्णु को श्रीपति भी कहा जाता है।

जब लक्ष्मी स्वर्ग में वास करती है तो उसे स्वर्गलक्ष्मी कहा जाता है, और जब वह इस भूमि पर वास करती है तो उसे गृहलक्ष्मी कहा जाता है। व्यापारी लोग उसकी वाणिज्यलक्ष्मी के रूप में पूजा करते हैं और योद्धा उसे विजयलक्ष्मी के रूप में पूजते हैं। कमल का फूल उसे इतना प्रिय है कि कई बार उसे कमला कहकर भी पुकारा जाता है।

चंदामामा की खबरें

दो असाधारण बालिकाएँ

अभी हाल ही में भारत की दो बालिकाओं की बहुत चर्चा थी। दोनों ही दसवीं कक्षा की परीक्षा के लिए बैठ रह थीं। मौसमी चक्रवर्ती की उम्र केवल ८ साल ७ महीने है, वह पश्चमी बंगाल की रहने वाली है। उसकी स्मरण-शक्ति अद्‌भुत है।

दूसरी बालिका है सुनीता काचरू सावंत। वह महाराष्ट्र की है। उसने अपने तमाम पर्चे अपनी पांव की अंगुलियों से लिखे, क्योंकि उसके हाथ जो नहीं हैं। कहते हैं, हर पर्चे के लिए उसे आधा घंटा फालतू दिया गया था, लेकिन उसने सब पर्चे निर्धारित समय, यानी तीन घंटे में ही खत्म कर लिये।
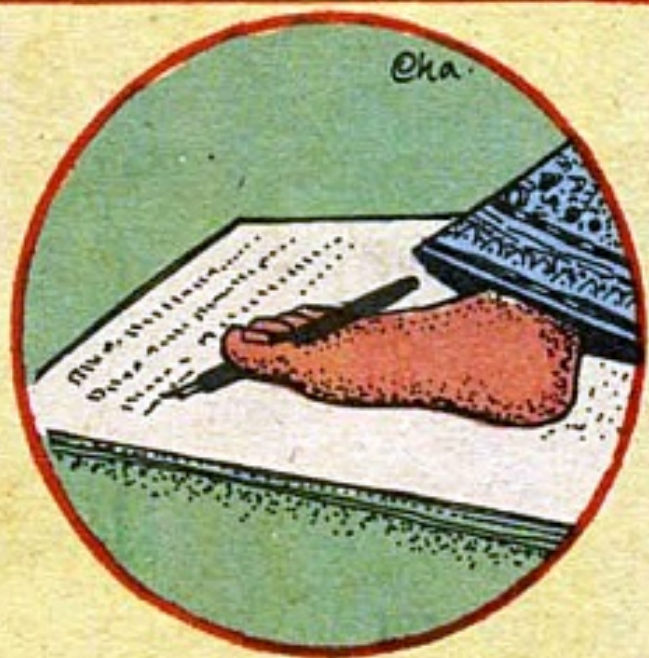
विश्वास नहीं हुआ

आठ साल के एक अमरीकी बालक ने अमरीका के राष्ट्रपति जार्ज बुश की आफत कर दी, क्योंकि वह यह मानने को तैयार ही नहीं था कि कक्षा में जो व्यक्ति उसके निकट खड़ा था, वह और कोई नहीं स्वयं राष्ट्रपति बुश थे।

राष्ट्रपति बुश बारकोफ्ट एलिमेंटरी स्कूल में मुआयना करने गये थे। उन्होंने नन्हें एंथोनी हैंडरसन को अपना ड्राइविंग लाइसेंस दिखाया जिस पर उसका नाम लिखा था। फिर उन्होंने उसे अपना क्रैडिट कोर्ड दिखाया, और अपने पोते का फोटो भी दिखाया। और तब भी जब वह नहीं माना तो उसे गेट के पास खड़ी राष्ट्रपति की कार दिखायी। एंथोनी इन सब प्रयासों पर केवल मुस्करा कर दिया, गोया कि उसे कोई बेहतर सबूत चाहिए था।

आओ, साहित्य की दुनिया में विचरण करें

१. भास्कर द्वारा रचित एक ग्रंथ में एक अध्याय उसकी बेटी के नाम पर है । उसकी बेटी का नाम क्या था? और उस ग्रंथ का क्या नाम था?

२. साहित्य में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाला पहला रूसी लेखक कौन था?

३. फूलों के रंगों ने सी.वी. रामन को एक पुस्तक रचने की प्रेरणा दी । उस पुस्तक का नाम क्या था?

४. 'द लास्ट मैन इन यूरोप' नामक पुस्तक दरअसल किसी दूसरे नाम से प्रकाशित हुई थी । वह नाम तथा उसके लेखक का नाम बताओ ।

५. मेरी एन्न इवान्स तथा एरिक ब्लेयर दो सुविख्यात लेखिकाओं के नाम हैं । ये थीं कौन?

उत्तर

सामान्य ज्ञान

१. कर्नाटक के कूर्ग में, जहाँ शिशु के जन्म लेते ही उसके हाथों में छोटा-सा तीर-कमान थमा दिया जाता है और बंदूक से गोली दागी जाती है । यह उसके इस दुनिया में आने का सूचक होता है ।

२. कर्नाटक का जोग जल प्रपात, जिसकी ऊंचाई २५३ मीटर हैं ।

३. 'द क्वीन ऑफ डेक्कन' आम तौर पर पुणे के लिए इस्तेमाल होता है । 'डेक्कन क्वीन' एक अतितीव्र गाड़ी का नाम है जो हर रोज़ पुणे और बंबई के बीच (१९० कि.मी.) चलती रहती है ।

४. कश्मीर की डल झील में चलने वाले शिकारे ।

५. एक की ऊँचाई १७ मीटर है और दूसरे की ७१ मीटर ।

साहित्य

१. लीलावती, सिद्धांत शिरोमणि ।

२. मिखेल शोलोकोव, १९६५ में ।

३. 'द फिज़ियालोजी ऑफ विज़ीन' जो रंगों का बखान करती है ।

४. १९८४ । लेखक: जार्ज ऑर्वेल

५. जार्ज इलियट, जार्ज ऑर्विआई

संसार की पौराणिक कथाएं—५

पर्सियस और आंद्रोमेदा

(पिछले अंक से आगे)

साहसी पर्सियस ने मेडुसा का अंत किया और फिर उसका सर अपने पास रख लिया। लौटते समय सागर के किनारे सुंदर आंद्रोमेदा से उसकी भेंट हुई। उसे एक विचित्र पशु निगलने को था। उसने उसका वध किया और आंद्रोमेदा की रक्षा की। इससे आंद्रोमेदा के माता-पिता उस पर बहुत खुश हुए और उन्होंने अपनी बेटी की पर्सियस से शादी कर दी।

शादी की रस्म पूरी हो गयी थी। लेकिन आंद्रोमेदा का एक रिश्तेदार युवराज फिनियस इस शादी से खुश नहीं था। इसलिए उसने अपने कुछ मित्रों की मदद से आंद्रोमेदा का अपहरण करना चाहा, पर असफल रहा। पर्सियस के पास मेडुसा का सर तो था ही। उसने उसी को आगे बढ़ाया। बस, सर का उनकी दृष्टि में पड़ना था कि वे सब शिलाएँ बन गये।
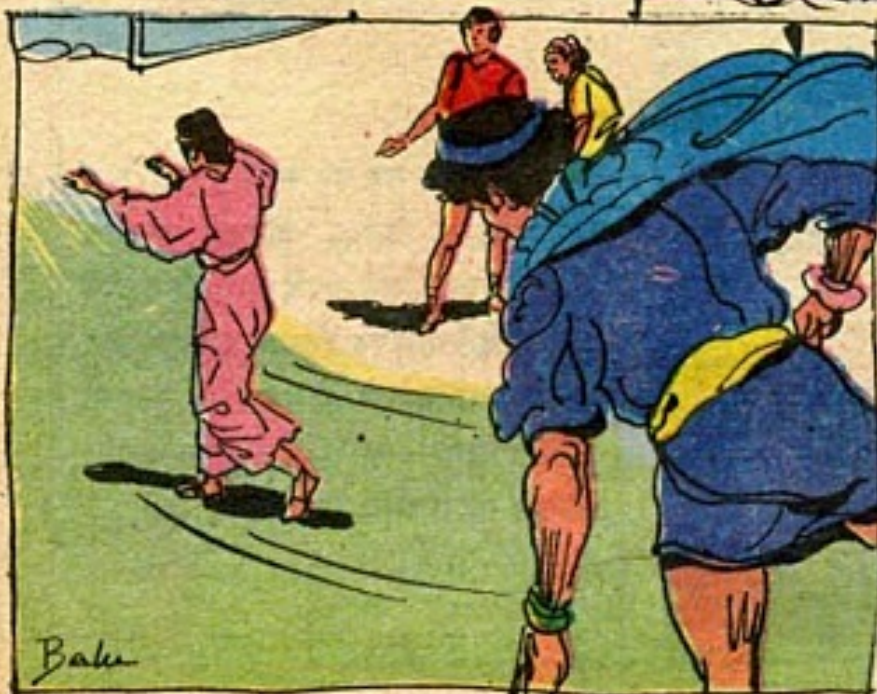
अब वहाँ से पर्सियस आंद्रोमेदा को लेकर अपनी माँ से मिलने सेरिफोज द्वीप पहुंचा। उधर वहां का राजा उसकी माँ पर ज़ुल्म पर ज़ुल्म ढा रहा था, और वह उन्हीं से बचने के लिए वहाँ से भाग रही थी। पर्सियस वहाँ ठीक समय पर पहुंचा था। वह अपनी माँ की दशा देखकर परेशान हो उठा। उसने तुरंत मेडुसा का सर आगे बढ़ाया और राजा को भी शिला बना दिया।
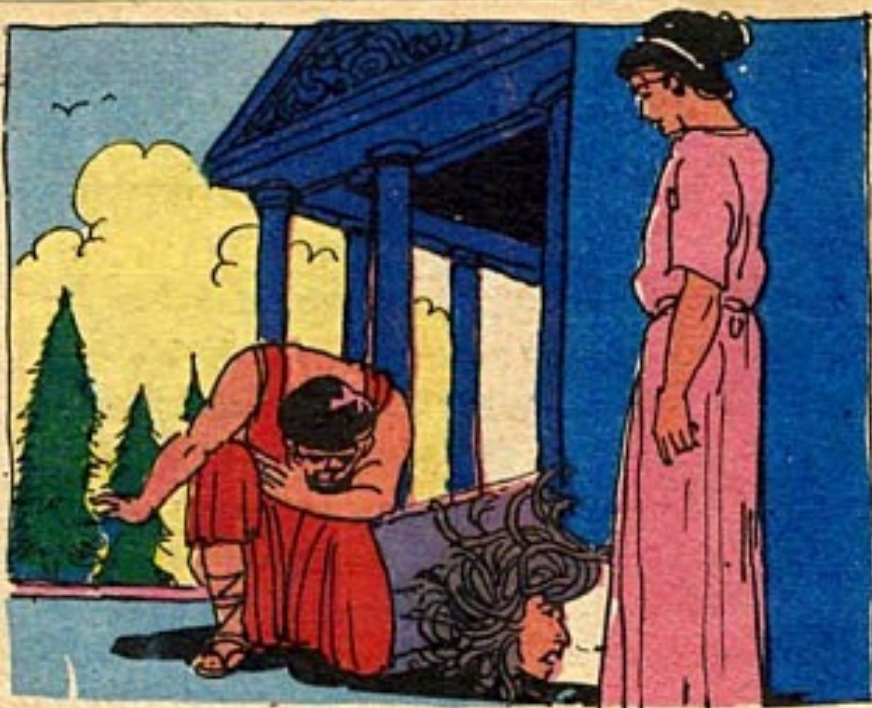
अब पर्सियस मेडुसा के सर का इस्तेमाल करना नहीं चाहता था। इसलिए उसने वह सर देवी मिनर्वा के मंदिर में चढ़ा दिया। भविष्य में वह अपनी ताकत के बलबूते पर ही रहना चाहता था। उसने निश्चय किया कि वह कुछ दिन मंदिर में ध्यानावस्था में बितायेगा और फिर अपने राज्य आर्गोस के लिए रवाना हो जायेगा।

मंदिर में कुछ दिन बिताने के बाद पर्सियस अपनी माँ और पत्नी के साथ आर्गोस के लिए निकल पड़ा। पर्सियस अभी नन्हा बच्चा ही था कि उसके दादा ने उसे उस की माँ के साथ सागर में छोड़ दिया था। अब वह एक सुंदर नाव में अपने जन्मस्थल की ओर लौट रहा था। नाव सुंदर तो थी ही, काफी बड़ी भी थी। पर्सियस का यश अब दिग्-दिगंत में फैलने लगा था।

नाव लारिस्सा तट पर रुकी। लारिस्सा के राजा ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया। फिर उसने अपने पिता की याद में बहुत बड़े पैमाने पर उत्सवों का आयोजन किया। पर्सियस ने भी सहर्ष उन उत्सवों में भाग लिया। लारिस्सा के राजा के प्रति उसका गहरा स्नेह हो गया था।

उन उत्सवों के दौरान वहां अनेक प्रकार की क्रीड़ा-प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। पर्सियस को एक भारी और मज़बूत पत्थर के पहिये को घुमा कर दूर फेंकना था। उसने वह पहिया इतनी दूर फेंका कि वह निर्धारित लक्ष्य से कहीं आगे निकल गया और उधर आ रहे एक व्यक्ति पर जा पड़ा।

पहिया क्योंकि बहुत भारी था, और बहुत गति से आया था, इसलिए उस के उस व्यक्ति पर गिरते ही उसने प्राण छोड़ दिये। वह व्यक्ति और कोई नहीं, पर्सियस का दादा और आर्गोस का राजा अक्रीसियस ही था। अपने पोते के ज़िंदा होने की खबर पाकर वह उससे बचने के लिए लारिस्सा चला आया था। पर नियति तो नियति ही है। उससे बचना आसान नहीं। उस की जान अपने पोते के हाथों जानी थी और चली गयी। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सच निकली।

अब पर्सियस लारिस्सा से आर्गोस पहुंचा। पर क्योंकि उसके अपने हाथों से उसके दादा की मौत हुई थी, इसलिए प्रायश्चित्त में उसने सिंहासन पर बैठने से इनकार कर दिया।

राज्य का काम तो चलना ही था। इसलिए पर्सियस ने मैसेनल नाम के एक नये नगर की स्थापना की और वहीं रहकर उसने राज-काज करना शुरू कर दिया। आंद्रोमेदा तो उस के साथ थी ही। दोनों ने अपनी प्रजा की जी-जान से सेवा की और हर तरफ से वाह-वाही लूटी।

पर्सियस जब नहीं रहा तो वहां की प्रजा ने उसकी एक मूर्ति बनवायी और उसको पूरे सम्मान के साथ स्थापित किया। और तो और, उसे दैव-रूप माना गया और उसकी उसी अनुरूप पूजा की जाने लगी।

पर्सियस के पुत्रों में से एक का नाम पेर्सस था। उसी ने पर्शिया यानी फारस देश की स्थापना की। फारस वासियों को पेर्सस की संतति माना जाना है। कई काव्यों और नाटकों में इसका उल्लेख है। यानी पर्सियस ही इन सब की प्रेरणा रहा। अरविंद ने भी पर्सियस नाम के नाटक की रचना की है।
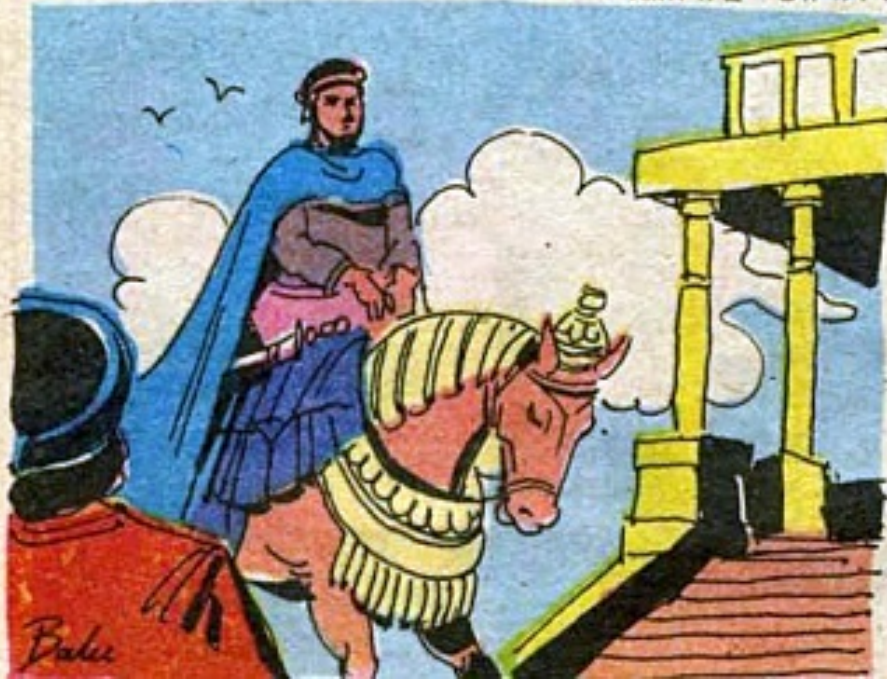
मिलन के निर्णय

पुराने वक्त की बात है । कोसल देश पर राजा चित्रध्वज का शासन था । सुबुद्धि उसका मंत्री था । पर नाम चाहे उसका सुबुद्धि था, अपने कर्मों से वह इसके बिलकुल विपरीत था । होते-होते यह बात राजा तक भी पहुँच गयी । पर राजा ने यह किसी पर ज़ाहिर नहीं होने दिया । वह अनजान बना हुआ, चुपके-चुपके, एक दूसरे मंत्री की खोज करने लगा । आखिर उसे पता चला कि पास के ही एक गांव में मिलन नाम का एक बड़ा ही योग्य व्यक्ति है जो एक गुरुकुल चलाता है ।

राजा ने उससे संपर्क किया । उसे वह योग्य लगा । उसने एक पत्र द्वारा अपने मन की बात उस तक पहुँचवायी ।

पत्र पढ़कर मिलन को अचंभा हुआ । तुरंत वह राजधानी के लिए चल पड़ा और राजधानी में पहुँचकर उसने राजा से भेंट की और बोला, "राजन्, गुरुकुल चलाने में मुझे बड़ा संतोष मिलता है । राजनीति के प्रति मेरा कोई लगाव नहीं । यह बात पत्र के ज़रिये मैं आप तक नहीं पहुँचाना चाहता था । इसलिए मैं स्वयं आप के सामने उपास्थित हुआ हूँ । आप मुझे क्षमा करें । मैं इस पद के योग्य नहीं हूँ ।"

चित्रध्वज मिलन की बात सुनकर बहुत प्रभावित हुआ । उसने कहा, "आप जैसे व्यक्तियों की ही, वास्तव में, मुझे ज़रूरत है जिन्हें किसी प्रकार का कोई लोभ नहीं, न पद का, न प्रतिष्ठा का । मेरा मंत्री सुबुद्धि तो ए कदम भ्रष्ट हो गया है । उसे तो बस केवल धन ही चाहिए । प्रजा की भलाई का तो उसे कोई ख्याल नहीं । मैं उसे इस पद से हटाना चाहता हूँ । आपको यह पद लोकहित में स्वीकारना होगा । हमें केवल सुबुद्धि को ही अपने पद से नहीं हटाना है, बल्कि उन सब अधिकारियों को भी हटाना है जिनकी सुबुद्धि

वसुंधरा श्रीवास्तव

से मिलीभगत है और जो अपने कर्तव्य से विमुख है । लेकिन यह काम बड़ी सावधानी से करना होगा । रहा आपके गुरुकुल को चलाने का सवाल तो उसकी मैं व्यवस्था कर दूंगा ।"

मिलन समझ गया कि यह राजा का एक प्रकार से आदेश ही है । इसलिए वह 'न' नहीं कह सका, और उसने मंत्री पद तुरंत संभाल लिया ।

मिलन का मंत्री बनना और सुबुद्धि का पदच्युत हो जाना, इसने सुबुद्धि को अचंभे में डाल दिया । दूसरे, यह परिवर्तन इतनी तेज़ी से हुआ था कि इसकी उसे भनक तक न लगी । इसलिए अपने कुकर्मों पर परदा डालना उसके लिए असंभव हो गया । और फिर मिलन ने तो अपना काम शुरू भी कर दिया था ।

सबसे पहले कैफ़ियत सुबुद्धि से ही तलब की गयी । सुबुद्धि घबरा तो गया ही था । उसे जब कुछ सूझा नहीं तो उसने सारा दोष अपने अधिकारियों के मत्थे मढ़ दिया । बोला, "ग़लतियाँ ज़रूर हुई हैं, पर मैं बेक़सूर हूँ । दरअसल, कुछ खास-खास काम ही मैंने अपने हाथ में रखे हुए थे, बाकी सब तो ये अधिकारी ही देखते थे ।"

सुबद्धि के इन विश्वास-पात्र अधिकारियों की संख्या लगभग एक सौ थी । मिलन ने उन सब से संपर्क किया, और उन सबका यही उत्तर था कि जो काम उन्हें मंत्री महादेय द्वारा सौंपा जाता था, उसे वे करते थे । इसलिए क़सूरवार वे नहीं, मंत्री महोदय स्वयं ही हैं ।

"इसका मतलब तो यह हुआ कि आप में से किसी का भी इस पचड़े में हाथ नहीं है!" मिलन ने जाँच जारी रखते हुए कहा, "अच्छा, आप लोगों के पास इस का कोई प्रमाण है?"

"एक नहीं, अनेक हैं," एक अधिकारी बोला । "अब भंडाफोड़ होना ही चाहिए । हम सैकडों प्रमाण जुटा देंगे ।"

"ठीक है, अब हम कल फिर मिलेंगे । तब तक मैं कुछ और काम भी कर लूंगा ।" मिलन मंत्री ने इतना कहकर उन सब अधिकारियों को वापस भेज दिया ।

अब मिलन ने सुबुद्धि को अपने साथ लिया

और राजा के पास पहुँचा । बोला, "राजन्, सुबुद्धि से एक कोताही हो गयी । उसने अपने अधिकारियों पर केवल अपना हुक्म ही चलाया, उनका प्यार पाने की कोशिश नहीं की । इसीलिए जैसे ही यह अपने पद से हटे, वैसे ही इनके ये अधिकारी इनके खिलाफ़ हो गये ।"

"तब इसे क्या दंड दिया जाये?" राजा ने जानना चाहा ।

"इस निर्णय पर मैं अभी तक पहुँच नहीं पाया हूँ । यह मैं आपको कल बताऊँगा ।" मिलन ने संक्षेप में उत्तर दिया ।

राजा यह जानते को उत्सुक था कि देखें अब मिलन इन अधिकारियों से कैसे निपटता है । इसलिए उसने इच्छा व्यक्त की कि अगले दिन वह भी मिलन के साथ बैठेगा ।

अगले दिन सुनवाई फिर शुरू हुई । नये मंत्री मिलन के साथ राजा भी बैठा था । अधिकारियों को एक-एक करके बुलवाया जा रहा था ।

पहला जो अधिकारी आया, उससे मिलन ने कहा, "अपने पहले मंत्री महोदय के बारे में आप जो कुछ भी जानते हैं, मुझे विस्तार से बतायें ।"

मिलन का इशारा पाकर उस अधिकारी ने तो सुबुद्धि के खिलाफ उसकी बुराइयों का पिटारा ही खोल दिया । तब मिलन ने उसे रोका, और बोला, "ये तो हुईं उसकी बुराइयां । अब मुझे कुछ उसकी अच्छाइयां भी बताइए ।"

अधिकारी चुप था । वह सुबुद्धि की एक भी अच्छाई नहीं बता सका । तब मिलन ने उसे रफा-दफा कर दिया ।

अब बारी आयी दूसरे अधिकारियों की । वे भी आये और चलते बने । उनमें से केवल दस अधिकारी ही ऐसे थे जो सुबुद्धि के गुणों के बारे में भी कुछ कह सके । सुबुद्धि का प्रमुख गुण जो मिलन को पता चला, वह था—अपना मनचाहा काम अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से येनकेन प्रकारेण, यानी प्यार से, डरा-धमकाकर, या प्रलोभन देकर प्यार करवा लेता ।

जब सब अधिकारी चले गये तो मिलन ने

राजा से कहा, "हमें केवल उन्हीं दस अधिकारियों को अपने यहाँ रखना है जिन्होंने सुबुद्धि के गुणों के बारे में भी चर्चा की । यानी नब्बे की एकदम छुट्टी कर देनी होगी । रहा सवाल सुबुद्धि का, तो उसे अपने कारावासों का प्रमुख बना देना चाहिए ।"

मिलन का निर्णय असाधारण था । राजा को हैरानी हुई । बोला, "यह कैसे निर्णय दे रहे हैं आप? अपराध-वृद्धि वाले सुबुद्धि को आप बर्खास्त करने के बजाय एक ज़िम्मेदारी वाला पद देना चाहते हैं और उसके गुणों का बखान करने वाले अधिकारियों को आप नौकरी में बनाये रखना चाहते हैं! यह तो न्याय न हुआ!"

राजा की बात सुनकर मिलन हंस दिया, और बोला, "राजन्, यह तो माना कि सुबुद्धि एक भ्रष्ट मंत्री था, पर साथ में यह भी मानना पड़ेगा कि अपने-अपने अधिकारियों को इस प्रकार भयभीत कर रखा था कि वे अपनी ज़बान नहीं खोल सकते थे । इसके लिए भी विशेष प्रकार की योग्यता चाहिए । यह हर किसी के बूते का नहीं । यही योग्यता अपराधियों को नियंत्रण में रखने के लिए दरकार है । इसी लिए मैंने उसे कारावास प्रमुख बनाने की सिफारिश की है । दूसरे, यह काम ऐसा है कि सुबुद्धि को अपना समय अपराधियों के साथ ही अधिकतर बिताना पड़ेगा । यह कोई कम सज़ा नहीं । हाँ, जहाँ तक उन नब्बे अधिकारियों का सवाल है, उन्हें तो हटाना ही होगा, क्योंकि जिन्हें दूसरों में केवल बुराई ही बुराई देखने की आदत है, वे किसी की भलाई कैसे कर सकते हैं!"

"वाह, मान गये हम आप को!" राजा एकाएक बोल पड़ा । "आप तो हमारे अनुमान से भी कहीं ऊंचे निकले । अब मुझे विश्वास हो गया है कि आप से बढ़कर और कोई मंत्री हो ही नहीं सकता ।"

राजा चित्रध्वज की अब सारी चिंताएँ मिलन ने दूर कर दी थीं । उसका हर निर्णय अद्भुत होता था । राज्य में किसी प्रकार की अशांति न थी । चारों ओर लोग खुश थे ।
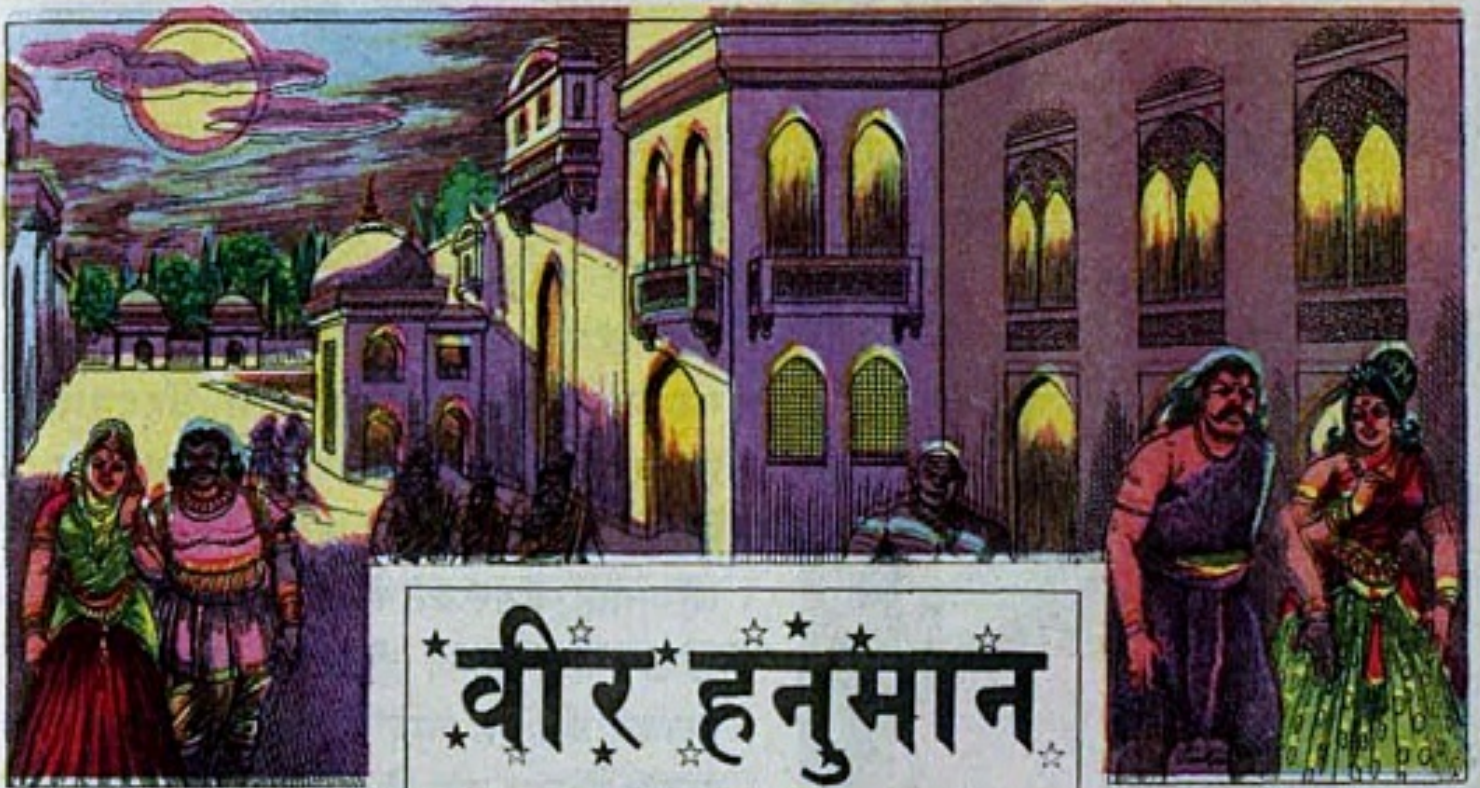
लंका नगरी में प्रवेश करके हनुमान अब वहाँ उन्मुक्त होकर घूमने लगा था। उसे वहाँ कई तरह के राक्षस दिखाई दिये। कुछ जटाएँ धारण किये हुए थे। कुछ के सर मुंडे थे। कुछ बैल की खाल पहने हुए थे। कुछ अभिचार हवन करके शत्रुओं पर उच्चाट करने को थे। कुछ के पास तरह-तरह के हथियार थे। कुछ की आकृति विकट थी। वे नाटे और काले थे। कुछ के सूप की तरह बड़े-बड़े कान झूलते दिख रहे थे। कुछ उन में सुंदर भी थे। वे ध्वज थामे हुए थे और इधर-उधर आ-जा रहे थे।

रात गुज़रती जा रही थी। आकाश में चंद्रमा चमक रहा था। हनुमान् घूरते-घूरते रावण के महल में पहुंचा। वहाँ कुछ स्त्रियाँ मधुर गीत गा रही थीं। कुछ अपने शरीर पर चंदन का लेप लगा रही थीं। कुछ तंद्रा में थीं और विश्राम के लिए लेटी हुई थीं।

हनुमान् उन सब स्त्रियों को बड़े ध्यान से देख रहा था। हो सकता है उन्हीं में उसे कहीं सीता भी दिख जाये। इसीलिए वह एक-एक पर अपनी नज़र फिरा रहा था। लेकिन ऐसी स्त्री उसे वहाँ कोई दिखाई नहीं दी जो सीता से मिलती-जुलती हो। इससे हनुमान् निराश हो गया। अब वह पूरी लंका छान मारे दे रहा था। जब वह पूरी लंका भी छान चुका तो वह वापस रावण के महल में दाखिल हो गया।

महल के जिस भाग में रावण स्वयं रहता था, वह तो अद्‌भुत था। उसका निर्माण चांदी से हुआ था, पर उस चांदी पर सोना चढ़ा

हुआ था । द्वारों पर रंग-बिरंगे बंदनवार दिखई दे रहे थे । बढ़िया से बढ़िया नस्ल के हाथी-घोड़े भी वहां .र थे । महापराक्रमी दिखने वाले राक्षस उस भाग पर पहरा दे रहे थे । वहाँ के वातावरण में अजब तरह की जीवंतता थी । काफी लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे । हर कहीं सुख-संतोष दिखाई दे रहा था । महल क्या था, इंद्रभवन ही था! समूची लंका नगरी का वह श्रृंगार था । ऐसे प्रासाद कल्पना-लोक में भी नहीं बन सकते!

प्रासाद के उस भाग में घूमते हुए हनुमान् हर छोटी-ब़ड़ी वस्तु को बारीकी से परख रहा था । अनगिनत वस्तुएँ थीं, प्रायः सभी सोने की । कुछ पर मणि-रत्न भी जड़े हुए थे । कई तरह के फूलदान थे । कई तरह के आसन थे । कई तरह के बर्तन थे । खिड़कियाँ भी मणि-रत्नों से जड़ी हुई , और उनमें चिड़ियों के सोने के पिजंरे, और वे भी मणि-रत्नों से जड़े हुए । हनुमान् को वहाँ एक पुष्पकविमान भी दीख पड़ा । वह पहले कुबेर का था । उस पर पहाड़, पृथ्वी, फूलदार पौधे, बेहद सुंदर सरोवर, कई-कुछ उकेरा हुआ था । वह विमान बहुत बड़ा था । कहते हैं उसमें जितने लोग चाहें, बैठ सकते थे । वह विमान भी एक छोटा-मोटा महल ही था । हनुमान् उसे देखकर दंग रह गया । वह काफी देर तक रावण के उस कक्ष में घूमता रहा । तब भी उसे ऐसे नहीं लगा जैसे उसने उसे समूचे को देख लिया हो । वह तो जैसे और-और विस्तार लेता जा रहा था । पर इतना घूम लेने पर भी उसे सीता कहीं दिखाई नहीं दी ।

हनुमान् ने रावण के उस कक्ष का एक प्रकार से चप्पा-चप्पा छान मारा था । रावण की पत्नियां जिस अंतःपुर में रहती थीं, वह वहां भी गया । रावण की पत्नियों में कुछ राक्षस-स्त्रियां थीं, कुछ राजकुमारियां थीं । इन राजकुमारियों को रावण ने अपने पराक्रम से जीता था । उनमें कुछ ऐसी भी थीं, जो रावण पर स्वयं ही मुग्ध होकर उससे प्रेम करने लगी थीं । हर जगह दीये जल रहे थे । चारों ओर उज्वल प्रकाश फैल रहा था ।

अंतःपुर में अनेक स्त्रियां निद्रा में थीं । उनके वस्त्र बेहद सुंदर थे । उनके बिछावन भी बेहद सुंदर थे । चारों ओर रेशम ही रेशम था । उनके आभूषण भी बेहद सुंदर थे । सब

में हीरे जवाहरात जड़े हुए थे। उनके गले फूल-मालाओं से लदे हुए थे। वे फूल बड़ी सौंधी खुशबू बिखेर रहे थे। उस समय आधी रात बीत चुकी थी। इसलिए वे जहाँ बैठी थीं, वहीं बैठी-बैठी सो रही थीं। तरह-तरह की वेश-भूषाओं और केशविन्यासों में सोयी हुई वे बड़ी अजीब लग रही थीं।

हनुमान उन सब को बड़े ग़ौर से देखता रहा। उसने विशाल शय्या पर सोये रावण को भी देखा। रावण के हाथ पाँच मुंह वाले महासर्पों के समान थे। उसका शरीर रक्तचंदन से पुता हुआ था। विशाल शय्या पर सोया विशाल शरीर वाला रावण खर्राटे लेता ऐसे दिख रहा था जैसे कि वह सोने का पहाड़ हो, क्योंकि उसका शरीर भी विभिन्न प्रकार के सोने के आभूषणों से लदा हुआ था।

रावण की पटरानी मंदोदरी एक दूसरी शय्या पर सो रही थी। वह भी रावण के समान ही भव्य दिख रही थी। वह इतनी सुंदर और सुघड़ थी कि हनुमान को एकाएक संदेह हुआ कि कहीं वही सीता न हो। लेकिन दूसरे ही क्षण उसका संदेह जाता रहा। राम को खोकर सीता इस प्रकार हार-श्रृंगार करेगी? और वह इस तरह चैन की नींद सो सकती है? और तो और, वह पराये पुरुष की पत्नी बनना कैसे स्वीकार कर लेगी? नहीं, नहीं, यह सीता तो कभी हो ही नहीं सकती। यह तो कोई बहुत बड़ा धोखा है। और इसी आवशसन के साथ वह आगे बढ़ा।

अब सीता की खोज में हनुमान हर झाड़-झंखार और पेड़-पौधा देख रहा था। उसने हर चित्रशाला में भी उसे ढूंढा। उसके मन में अब एक और संदेह उठने लगा था—कहीं सीता की मौत तो नहीं हो गयी? हो सकता है पहले रावण ने उसे दूसरे तरीकों से अपने वश में करना चाहा हो और जब वह न मानी हो तो उससे ज़ोर-जबरदस्ती करने पर उतारू हो गया हो! या यह भी हो सकता है कि ऐसे विकृत-विकराल रूप वाली इन राक्षसियों को देखकर वह चिर-निद्रा में सो गयी हो!

सुग्रीव द्वारा दी गयी अवधि कब की खत्म हो चुकी थी। अब क्या वह खाली हाथ लौट जाये? तब सब को क्या उत्तर देगा! क्या वे उससे तरह तरह के प्रश्न नहीं करेंगे? क्या वे पूछेंगे नहीं कि तुम ने इतने दिन वहाँ रहकर

नहीं है, तो वह निराश हो जाता । एक शंका उसके मन में और उठी । कहीं ऐसा तो नहीं कि जब रावण सीता को उठाये लिये चला जा रहा था तो वह कहीं बीच में ही गिर गयी हो! सागर में गिरी होगी तो अथाह जल में कहीं पता भी नहीं चला होगा! या यह भी तो हो सकता है कि राम के वियोग में तड़प-तड़प कर उसने प्राण त्याग दिये हों!

हनुमान् ने अब निश्चय कर लिया था कि यदि वह सीता को न खोज पाया तो वह सागर के तट पर चिता चिनकर उस में जल मरेगा । फिर उसके मन में एक और विचार आया—क्यों न वह रावण का ही अंत कर दे? इससे सब खुश हो जायेंगे । और हां, एक तरीका और भी है—कि वह रावण को यज्ञ—पशु की तरह घसीटता हुआ राम के समक्ष ले जाये और फिर उसे उनके चरणों में पटक दे! इससे अच्छा तो शायद और कुछ हो ही नहीं सकता!

क्या प्राप्त किया? तुम्हारी उपलब्धि क्या रही? वे चाहें तो उसकी जी भरकर खिल्ली उड़ा सकते हैं ।

जो भी हो, ज़्यादा सोचने से होगा भी क्या! उसे तो ठोस परिणाम चाहिए । इसलिए उसने अब दूर-दराज़ के प्रांतरों में सीता को खोजना शुरू किया । उसने कई चढ़ाइयां पार कीं, वह कई गहराइयों में उतरा । उसने पाताल को भी छान मारा । कई स्थलों पर घने जंगल थे । उसने उनका भी चप्पा-चप्पा देखा । इस खोज-बीन में उसे कई प्रकार की स्त्रियां दीख पडीं, लेकिन कहीं भी सीता का कोई पता न था । सुंदर, सुघड़ स्त्रियों को देखकर उसके मन में आशा जगती । लेकिन जब उसे निश्चित हो जाता कि उन में सीता कहीं भी

हनुमान् ऐसे ही विचारों में डूब-उतर रहा था कि उसे दूर, ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से घिरा एक वन-सा दीख पड़ा । उसे पता चला कि उस उद्यान का नाम अशोक वन है । उस वन को वह पहली बार देख रहा था । हो सकता है सीता वहीं, किसी वाटिका में हो! हनुमान् के मन ने एक बार फिर उछाल खायी । नहीं, वह उसे ढूंढ़कर ही रहेगा । उस वन की वाटिकाओं में तो उसे ज़ाकर देखना चाहिए ।

हनुमान् में अब एक बार फिर फुर्ती मार गयी थी । वह तेज़ी से उछलता हुआ उस वन

की ओर बढ़ा । उसने अपने शरीर को बहुत छोटा कर लिया था जिससे उसे यहाँ-वहाँ, इधर-उधर, बेरोक-टोक विचरने में कोई कठिनाई नहीं आ रही थी । वसंत ऋतु शुरू हो चुकी थी । इसलिए हर पेड़-पौधा हरा-भरा हो नाचता दिखता थां । साल, अशोक, चंपक , उद्दाल, नाग, रसाल, कपिमुख सभी नाचते दिखते थे । बड़ी ही आकर्षक दृश्यावली थी । कुछ वृक्षों पर लताएँ लिपटी हुई दिखाई दे रही थीं ।
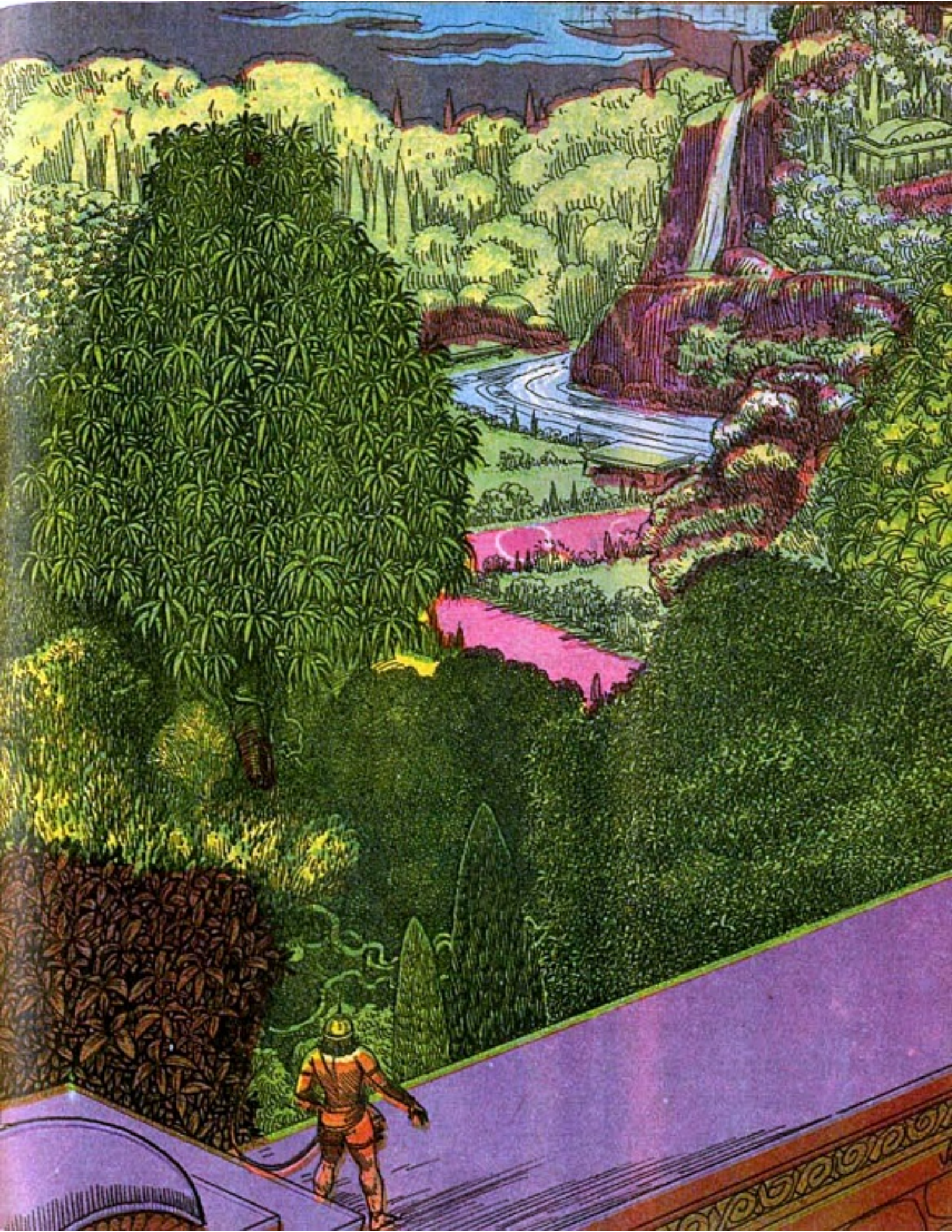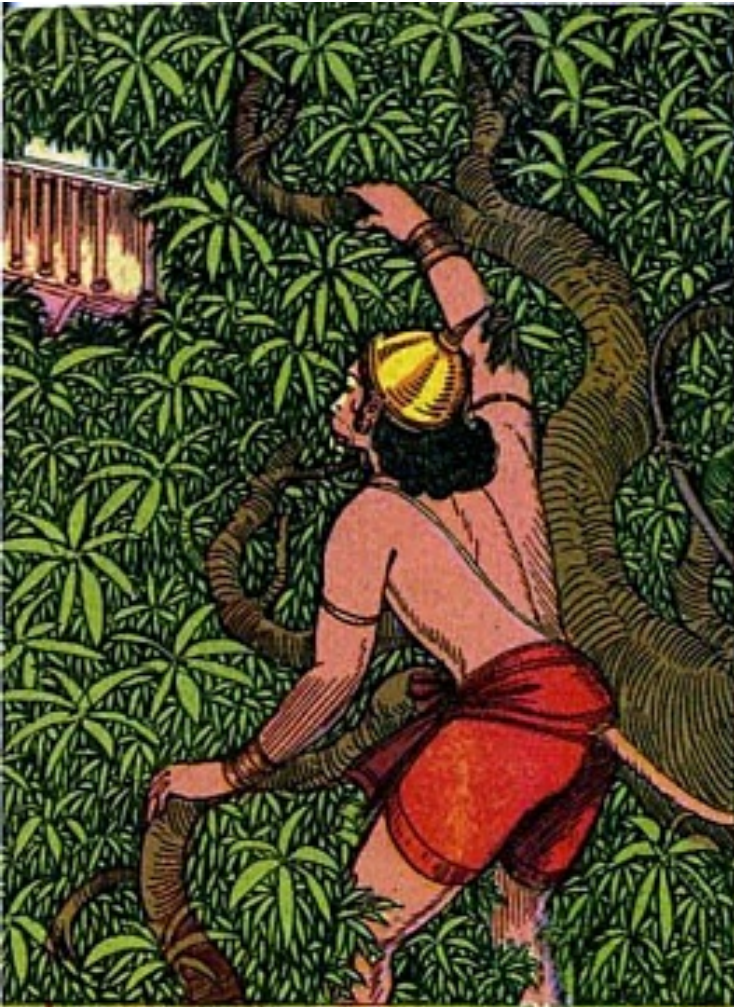
हनुमान् उस वन में बाण की गति से पेड़ों के बीच से होता हुआ इधर-उधर आ-जा रहा था । उसकी उछल-कूद इस कद्र बढ़ गयी थी कि पेड़ों पर सोने वाले पक्षी परेशान हो उठे थे और ज़ोर-ज़ोर से चीखने-चिल्लाने लगे । साथ ही पेड़ों से फूल और पत्ते झड़-झड़कर उसके ऊपर गिरने लगे थे, जिससे कभी-कभी वह ढक-सा जाता । उसे उस वन में सरोवर, पहाड़ी टीले और सोने-चांदी के बनावटी वृक्ष और झाड़ियां दिखाई दीं ।

अशोक वन में एक क्रीडा-पर्वत भी था । पर्वत के कई ऊंचे ऊंचे शिखर थे । वहाँ अनेक पत्थर के घर भी थे । पेड़-पौधे भी थे । पर्वत से एक नदी बहती हुई नीचे गिर रही थी । वहीं, पास में एक बावड़ी भी थी । उसके चारों ओर ऊंचे-ऊंचे महल थे । महल सब सोने से मढ़े हुए थे ।

हनुमान घने पत्तों वाले एक पेड़ पर बैठकर चारों ओर का दृश्य देखने लगा । थोड़ी दूरी पर उसे एक सफेद महल दीख पड़ा । उस महल की कारीगरी अद्भुत थी । उसके सौ खंभे थे । वहीं हनुमान् को एक स्त्री दीख पड़ी । वह सूखकर क्षीणकायी हो गयी थी । वस्त्र भी उसके बहुत साफ नहीं थे, बल्कि साड़ी तो काफी मुचड़ी हुई थी । वह बहुत दुःखी दिख रही थी । उसके चारों ओर राक्षसियां पहरे पर तैनात थीं ।

रावण जब सीता को उठाकर ले जा रहा था, तब हनुमान ने सीता को देखा था । उसमें परिवर्तन तो बहुत आ चुके थे, पर उसके आकार-प्रकार में कोई परिवर्तन नहीं आया था । सीता ने ऋष्यमूक पर्वत पर उस समय कुछ आभूषण गिराये थे जब रावण उसे उठाकर लिये ज़ा रहा था । लेकिन कुछ

आभूषण सीता के पास ही थे, और राम ने उनका विवरण हनुमान् को दिया था ताकि वह सीता को पहचान सके। जो आभूषण सीता ने गिराये थे, वे उसके शरीर पर दिखाई नहीं दे रहे थे। इसलिए हनुमान को अब विश्वास हो गया था कि हो न हो, यह सीता ही है। इस विश्वास से वह आनंद-विभोर हो उठा। वह एक पेड़ के घने पत्तों में छिपा रहा और एकदम सतर्क रहा ताकि राक्षस-नारियां उसे देख न लें। अब वह सीता की चौकसी कर रही राक्षसियों को गौर से देखने लगा।

रात अब काफी जा चुकी थी। कुछ ही समय बाद अब दिन होना शुरू हो जायेगा। राक्षस अब वेदाध्ययन में लग गये थे और हनुमान् एकचित्त हुआ उन्हें सुन रहा था। उसी समय मंगलवाद्य बजने लगे। हनुमान ने दूर से ही देखा कि रावण बड़ा सज-धज कर, जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ, अशोकवन की ओर चला आ रहा है, और उसके पीछे-पीछे एक सौ देवस्त्रियां और गंधर्व स्त्रियां भी चली आ रही हैं। कुछ स्त्रियों के हाथों में सोने की मशालें थीं। कुछ स्त्रियाँ चंवर झुला रही थीं। कुछ स्त्रियों के हाथों में नंगी तलवारें थीं और कुछ स्वर्ण-पात्रों में जल लिये हुए थीं। एक स्त्री रावण के पीछे-पीछे छत्र लिये चल रही थी।

स्त्रियों के चलने से हनुमान् को अनेक नूपरों की ध्वनि सुनाई दी और वह उस ओर आकृष्ट हुआ। मशालों के प्रकाश में वह रावण को स्पष्ट देख पा रहा था। वह अब यह देखना चाहता था कि रावण सीता की वाटिका में पहुँचकर क्या करेगा। इसलिए

वह धीमे से एक निचली टहनी पर आ बैठा और पत्तों के बीच छिपकर नीचे का दृश्य आंखें गड़ाये देखने लगा । रावण सीधे सीता के समीप आकर रुका था । उसका दूर से ही आभास पाकर सीता कंपकंपाने लगी थी । वह पाँव मोड़कर अपने वक्ष को अपने हाथों से ढाँपे बैठी रो रही थी । फिर वह चारों ओर अपनी नज़र घुमाने लगी, इस आशय से कि शायद उसकी रक्षा के लिए कोई आ जाये । पर उसे निराशा ही मिली ।

मूर्ति बनी, शोक में डूबी सीता से रावण ने इन शब्दों के साथ अपनी बात शुरू करनी चाही: "सीता, मुझ से तुम्हारे इस प्रकार डरने और संकोच करने का कारण मैं समझ नहीं पा रहा हूँ । मैं तुम्हारी सुंदरता पर मुग्ध हूँ और मेरा मोह तुम्हारे प्रति बराबर बढ़ता ही जा रहा है । तुम मुझे स्वीकारो । यहाँ तुम्हें किसी प्रकार से डरने की कोई ज़रूरत नहीं । जब तक तुम्हारे मन में मेरे प्रति प्यार उत्पन्न नहीं होगा, तब तक मैं तुम्हें छुऊंगा भी नहीं । तुम दुखी मत हो । तुम इस प्रकार के मैले-कुचैले और मुचड़े हुए वस्त्र क्यों पहने रहती हो? तुम्हें इस प्रकार भूखी-प्यासी भी नहीं रहना चाहिए । यहाँ अनेक दासियाँ तुम्हारी सेवा में खड़ी हैं । तुम उनसे अपने बाल सँवरवाओ । स्वच्छ वस्त्र पहनो । तुम्हारे लिए यहाँ आभूषणों और फूल- मालाओं की कोई कमी नहीं । तुम उन्हें उपयोग में लाओ । यहाँ तुम्हारे लिए हर प्रकार की सुख-सुविधा है । नृत्य-गान की भी व्यवस्था है । तुम अपने को प्रसन्न-चित्त रखो और अपना यौवन यूँ ही मत गंवाओ । तुम्हारे जैसी सुंदर स्त्री इस समूचे ब्रह्माण्ड में नहीं । मुझे स्वीकारो और पराया मत समझो । मैं तुम्हें अपनी पटरानी बनाऊँगा और सबसे ऊँचा स्थान दूँगा । मुझे तुम अपना दास समझो । तुम जो भी चाहोगी, पूरा होगा । मुझे आदेश दो । जंगलों में भटकनेवाला वह राम अब तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता । उसे तुम भूल जाओ । वह तो यहाँ पाँव भी नहीं रख सकता । यदि वह यहाँ किसी तरह पहुँच भी गया तो वह जिंदा वापस नहीं जा पायेगा ।"

एक अद्‍भुत कौआ

बहुत पुरानी बात है । उन दिनों कश्मीर के एक गांव में एक बहेलिया रहता था । वह काफी ग़रीब था । वह रोज़ सुबह-सुबह ही जंगल में चला जाता और शाम को सुंदर पक्षियों के साथ शहर में पहुंचता और उन्हें बेचकर घर लौटता । इसी तरह उसका गुज़ारा चल रहा था ।

उस बहेलिये का एक बेटा भी था, सुधाम । जब तक बाप ज़िंदा रहा, बेटे का पालन-पोषण होता रहा, लेकिन जैसे ही उस बहेलिये का देहांत हुआ, बेटा बेसहारा हो गया । मजबूर होकर उसे छोटी उम्र में ही बाप का पेशा अपनाना पड़ा ।

बाप के देहांत के दूसरे ही दिन सुधाम जंगल में पहुंचा और उसने एक ऊंचे पेड़ की शाखा से पक्षियों को पकड़ने वाला पिंजरा लटका दिया । पिंजरा लटका देने के बाद वह इंतज़ार करने लगा । पिंजरा लटकाये अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि इसमें एक पक्षी आ फंसा । सुधाम झट से पेड़ पर चढ़ा और उसने देखा कि पिंजरे में एक कौआ है । कौए को देखकर वह परेशान हो गया । इसे कौन खरीदेगा? वह यह सोच ही रहा था कि कौआ मानव स्वर में बोला, "महोदय, आप मुझे छोड़ दें । मैं आपकी हर तरह से सेवा करूंगा । कल ही आपके पिंजरे में एक सुंदर पक्षी आयेगा । उसे आप महाराजा के पास ले जायें । महाराजा आपको मालामाल कर देगा!"

सुधाम ने कौए की बात मान ली और उसे आज़ाद कर दिया । कौए ने अपने वचन का पालन किया । दूसरे दिन पिंजरे में एक बहुत ही सुंदर पक्षी आ बैठा । उसे लेकर वह महाराजा के महल में पहुंचा । महाराजा ने उस पक्षी के बदले में सुधाम को ढेर सारा सोना दिया ।

कश्मीरी लोककथा

महाराजा के यहां एक विदूषक था। उसे सुधाम से बहुत जलन हुई। इसलिए वह महाराजा से बोला, "हुज़ूर, इतने सुंदर पक्षी को यों लोहे के पिंजड़े में रखना ठीक नहीं लगता। इसके लिए तो हाथी दांत का एक बड़ा-सा घर होना चाहिए जिस में यह आज़ादी से घूमे-फिरे!"

"पर इतना हाथीदांत आयेगा कहाँ से?" महाराजा ने प्रश्न किया।

"इसमें कौन-सी मुश्किल है! जो बहेलिया इतना सुंदर पक्षी ला सकता है, वह उसके लिए हाथी दांत भी ला सकता है।" विदूषक ने उत्तर दिया।

महाराजा ने सुधाम को बुलवाया और उससे कहा, "तुम जिस अनोखे पक्षी को लाये हो, उसके लिए हम हाथी दांत का घर बनवाना चारते हैं। उस हाथी दांत की व्यवस्था तुम्हें करनी होगी। चालीस दिन में। वरना तुम्हारा सर तुम्हारे धड़ पर नहीं रहेगा।"

महाराजा का इतने कड़े शब्दों में आदेश पारकर सुधाम की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। वह सोचते-सोचते घर लौट आया।

इतने में वहां वही कौआ आ पहुंचा और बोला, "आप इस कदर परेशान क्यों हैं?"

सुधाम ने अपनी व्यथा कौए को कह सुनायी। कौआ बोला, "इसमें परेशान होने की क्या बात है? यह तो बस हुआ सो हुआ। आप महाराजा से चालीस कनस्तर शराब लीजिए। यहाँ से एक सौ योजन दूर एक सरोवर है। वहाँ हर रोज़ हाथी झुंड के झुंड पानी पीने आते हैं। आप यह शराब उस सरोवर में डलवा दें। बस, समझ लीजिए आपका काम हो गया!"

सुधाम ने वैसा ही किया। वह फौरन महाराजा के पास पहुंचा और उससे चालीस कनस्तर शराब की मांग की। उसने गाड़ियों पर चालीस कनस्तर शराब लदवायी और सुधाम सीधे कौए द्वारा बताये गये सरोवर पर पहुंचा, उसने वह शराब उस में उंडेलवा दी।

उसी रात सरोवर पर पानी पीने हाथियों का एक बहुत बड़ा झुंड़ आया। सभी हाथी गटागट पानी पीने लगे। लेकिन जैसे-जैसे वे पानी पीते गये, वैसे-वैसे वे अपने होश खोते गये और वे वहीं लुढ़क गये। सुधाम ने फौरन उन हाथियों के दांत काटने शुरू कर दिये और

उन्हें गड़ियों पर लदवाता गया ।

सब गाड़ियां जब हाथीदांत से लद गयीं तो सुधाम वापस महाराजा के यहाँ पहुँचा । महाराजा ने जब इतना हाथीदांत देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना न था । उसने उसे खूब इनाम दिया और पक्षी के लिए एक अनूठा दंतगृह बनवाना शुरू कर गया ।

सुधाम की इस सफलता से विदूषक को फिर परेशानी हुई । वह मारे जलन के पागल हो रहा था । उसने महाराजा को फिर उकसाना शुरू किया, "राजन्, लगता है हमारा पक्षी अब भी खुश नहीं है । वह चहक कर तो कभी गाता ही नहीं!"

"तो फिर? इसके लिए हम क्या करें?" महाराजा ने पूछा ।

"दरअसल, यह पक्षी तभी गायेगा जब इसका मालिक इसके सामने आयेगा!" विदूषक ने सुझाव दिया ।

"अब इसके मालिक का कैसे पता चले? उसे कौन ढूंढ़ेगा?" महाराजा ने पूछा ।

"उसे वही ढूंढ़ेगा, जो इतना हाथीदांत लाया है । उसके लिए यह काम असंभव नहीं है ।" विदूषक ने उत्तर दिया ।

महाराजा ने फौरन सुधाम को बुलवाया और उसे आदेश देते हुए कहा, "चालीस दिन के भीतर उस पक्षी का मालिक मेरे सामने हाज़िर हो जाना चाहिए । नहीं कर सके, तो तुम्हारा सर तुम्हारे धड़ पर नहीं रहेगा ।"

महाराजा का आदेश सुधाम पर वज्र की तरह पड़ा । वह फिर सोच में पड़ गया और एकदम उदास हो गया । अब उसे पक्का विश्वास हो गया था कि वह किसी तरह बच नहीं सकता, और उसकी मौत निश्चित है ।

जिस समय सुधाम उदासी में डूबा, टकटकी लगाये आकाश की ओर देख रहा था, तभी वहाँ वह कौआ फिर आ पहुँचा और सुधाम से बोला, "इस बार आपकी उदासी का कारण?"

सुधाम ने फिर उसे सारा ब्योरा दिया और बोला "अब तो मेरा मरना तय है!"

"अरे, इतनी सी बात पर इस तरह परेशान हैं!" कौआ बोला, "आप महाराजा से एक नौका लें, उस में राजसी ठाठ की हर चीज़ जुटा लें । फिर उस नौका को नदी में उतारें और उसमें बैठकर पूरब की ओर

रवाना हो जायें । बस, सौ योजन जब तय करेंगे तो किन्नर प्रदेश में पहुँच जायेंगे । वहाँ आपकी नौका देखने अनेक किन्नर आयेंगे । वहाँ उनकी रानी भी आयेगी । आप केवल रानी को ही नौका में चढ़ने दे बाकी और किसी किन्नर को नहीं । ज्यों ही रानी नौका की साज-सज्जा देखना शुरू करे, वैसे ही आप नौका को छोड़ दें, और वापस अपने देश आ जायें । वह रानी ही उस पक्षी की मालिक है ।"

कौए ने जो सुझाव दिया था, सुधाम ने उसका पालन किया । महाराजा से कहकर उसने एक अनूठी नौका तैयार करवायी और उसमें आराम-ऐश्वर्य की हर वस्तु की व्यवस्था की । उसमें कई तरह की सजावट थी । एक से एक बढ़िया चित्र थे । स्नान, विनोद, विहार, सब तरह के साधन उपलब्ध थे । नौका को फिर नदी में उतारा गया और वह पूर्व की ओर चल दी ।

कुछ दिन चलते रहने के बाद वह किन्नरों के इलाके में पहुँची । इससे पहले किन्नरों ने कभी नौका नहीं देखी थी । इसलिए वे सब के सब उसे देखने उमड़ पड़े । पर सुधाम ने उन्हें नौका के पास फटकने न दिया और बोला, "पहले मैं तुम लोगों की रानी को यह नौका दिखाऊंगा । उसे इस में घुमाऊंगा । फिर तुम लोग इसे देख पाओगे ।"

किन्नरों की रानी भी वहाँ मौजूद थी । सुधाम की यह बात सुनकर वह बहुत खुश हुई और झट से नौका में चढ़ गयी । फिर उसने नौका को देखना शुरू कर दिया । नौका की सजावट अद्भुत थी । नीचे नरम-नरम कालीन, सुंदर कारीगरी वाले कई प्रकार के रोशनी बिखेरते दीये, दीवारों पर तरह-तरह के चित्र, रानी उन्हें देखते-देखते उनमें खो गयी । इतने में सुधाम ने नौका का पाल तान दिया । नौका अब अपने आप आगे बढ़ रही थी । रानी का कौतूहल बराबर बना हुआ था । जब तक वह कुछ शांत हुआ, तब तक नौका चार योजन पार कर चुकी थी । फिर नौका चलती ही रही और सुधाम रानी के साथ वापस महाराजा के महल में आ पहुँचा ।

रानी को देखते ही हाथीदांत के घर में विचरता पक्षी एकदम चहचहा उठा और सुरीली आवाज़ में गान करने लगा । इस पर महाराजा बहुत खुश हुआ, और फिर जब

उसकी दृष्टि किन्नर रानी पर पड़ी तो वह और भी खुश हो गया और आनंद विभोर हो झूमने लगा । फिर उसने रानी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा और रानी ने उसे तुरंत स्वीकार कर लिया ।

विवाह वैभवपूर्ण ढंग से हुआ । उसमें अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे । समूचा प्रबंध सुधाम के हाथ में था । इस विवाह में वह अद्‌भुत कौआ भी उपस्थित था । वह सुधाम के कंधे पर बैठा था और चारों ओर का दृश्य देख रहा था ।

इतने में रानी वहाँ आयी । सुधाम ने कौए का परिचय देते हुए कहा, "यह कौआ मेरा मित्र है!"

रानी कौए को देखते ही बौखला गयी और बोली, "अरी पिशाचिनी, तू यहाँ तक भी आ पहुँची!"

सुधाम को रानी के इस संबोधन पर हैरानी हुई । बोला, "इससे कोई ग़लती हो गयी हो तो क्षमा करें । इसने तो हमेशा मेरी मदद की और मुझे हर संकट से उबारा । आप तक मुझे पहुँचाने वाला भी यही था ।"

रानी ने सुधाम के मुंह से ये सब बातें सुनीं तो उसका क्रोध एकदम शांत हो गया । बोली, "अब तक तो यह बड़ी घमंडी रही । तभी मैंने इसे कौआ बना दिया । खैर, अब तुम कहते हो तो मैं वापस इसे इसका असली रूप दे देती हूँ ।"

और तभी सुधाम के कंधे पर बैठा कौआ एकाएक फड़फड़ाया और देखते ही देखते वह एक सुंदर किन्नर युवती में परिवर्तित हो गया । वह युवती सुधाम की बिलकुल बगल में ही खड़ी थी ।

महाराजा ने यह सब देखा तो वह बहुत खुश हुआ । अपने ही मुहूर्त्त में उसने उस युवती की शादी भी तय कर दी । और उसका वर, वही सुधाम था ।

उधर विदूषक को अपने किये का फल मिल गया । उसके लिए फांसी की सज़ा तय हुई थी । लेकिन सुधाम को महाराजा ने अपने दाबार में ही रख लिया ।

अब सुधाम के जीवन में सुख ही सुख था ।

बाघ नहीं आया!

कंचनपुर गांव में शिब्बू नाम का एक चरवाहा रहता था । वह रोज़ अपने मालिक की भेड़ें चराने उन्हें जंगल में ले जाता था और शाम होते ही उन्हें हांकता हुआ वापस आ जाता था ।

एक बार शिब्बू को कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ी । उसने इधर-उधर से इंतज़ाम करने की बहुत कोशिश की, पर नाकाम रहा । आखिर, मजबूर होकर उसे एक भेड़ बेचनी पड़ी ।

लेकिन वापस जब घर पहुंचा तो हमेशा की तरह मालिक ने भेड़ों की गिनती की और एक भेड़ कम पाकर शिब्बू से बोला, "अरे शिब्बू, एक भेड़ कहां गयी? रेवड़ में तो वह नहीं है!"

शिब्बू पहले सकपका गया, फिर बोला, "मालिक, आज एक बड़ा ही चालाक बाघ वहां आ निकला और एक भेड़ ले उड़ा ।"

मालिक ने समझा शिब्बू सच ही कह रहा होगा । इसलिए उसे थोड़ा डांटकर और आइंदा सावधान रहने की हिदायत करके उसने बात को आय-गया कर दिया ।

लेकिन अगले दिन शिब्बू ने एक और भेड़ बेच डाली और मालिक को बाघ वाली कहनी सुनाई ।

"तो ठीक है, इसका इंतज़ाम मैं किये देता हूं," मालिक ने कहा, "मैं कल माधो शिकारी को अपने साथ लेकर स्वयं वहां आऊंगा और देखूंगा वह चालाक बाघ कैसे बच निकलता है!"

अगले दिन देर तक प्रतीक्षा करने पर भी बाघ वहां नहीं आया । तब मालिक ने शिब्बू से कहा, "क्यों रे, आज बाघ को क्या हो गया? आज तो आया नहीं!"

शिब्बू भी चालाक तो था ही । झट से बोला, "मालिक, मैंने आपको बताया न था! वह बड़ा घाघ बाघ है । इतनी आसानी से काबू नहीं आयेगा । वह समझ गया होगा कि आज माधो शिकारी भी हमारे साथ है! अब जब तक माधो हमारे साथ रहेगा, वह बाघ इधर फटकेगा भी नहीं ।"

"तो ठीक है," मालिक शिब्बू की चालाकी भांप गया था, "कल से माधो ही इस रेवड़ को चराया करेगा । तुम्हारे आने की कोई ज़रूरत नहीं ।"

मालिक की बात सुनते ही शिब्बू एकदम सकते में आ गया । उसके पांव पर गिरते हुए बोला, "मुझ से भूल हुई । मुझे क्षमा करें ।"

मालिक दयालू था । बोला, "ठीक है । अब तुम ईमानदारी से काम करो, नहीं तो भूखों मरोगे!"

—कृष्ण अय्यर

पिशाचिनी

एक गांव में एक किसान रहता था। उसकी उम्र अभी ज़्यादा नहीं थी कि उसकी पत्नी चल बसी।

उसी गांव में रूपानी नाम की एक लड़की रहती थी। वह बिलकुल अकेली थी।

किसान को उस बेसहारा और मंदबुद्धि लड़की पर तरस आया। वह हर रोज़ उसे अपने घर बुला लेता और उससे घर का काम करवाता। रूपानी उसके खेते में भी काम कर आती।

एक बार रूपानी एकाएक किसान से बोली, "जब मैं तुम्हारा सब काम करती ही हूं तो तुम मुझ से शादी क्यों नहीं कर लेते?"

रूपानी की बात पर किसान हंस दिया और बोला, "अरे, शादी करनी होती तो मैं बहुत पहले कर लेता! मुझे अब तक इंतज़ार करने की क्या ज़रूरत थी?"

पर यह बात रूपानी के पल्ले न पड़ी। वह सवाल पर सवाल करने लगी, "मुझ से शादी क्यों नहीं करना चाहते? मुझ में क्या बहुत बुराइयां हैं?"

इसी तरह रोज़ रूपनी किसान से सवाल पर सवाल किये जाती। किसान रूपानी से परेशान हो उठा था। जब एक दिन थककर खेत में ही बेसुध-सी हुई रूपानी सो गयी तो किसान ने काजल में तेल मिलाकर, उसे उसके समूचे बदन पर पोत दिया।

शाम को जब रूपानी की नींद खुली तो अपना पुरा शरीर देखकर वह डर गयी। उसे अपने पर संदेह होने लगा और उसी संदेह में उसने अपने से पूछा, "क्या मैं वही हूं? मैं डायन तो नहीं बन गयी?"

फिर उस संदेह का निवारण करने के लिए वह किसान के घर पहुंची और उससे बोली, "क्या रूपानी घर पर है?"

किसान तो उसे छकाना चाहता ही था।

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

इसलिए बड़ी मासूमियत से बोला, "हां, वह तो घर पर ही है!"

रूपानी अब चक्कर में पड़ गयी। उसे विश्वास हो गया कि वह रूपानी नहीं है। इसलिए उस झुटपुट में ही वह जंगल की ओर दौड़ पड़ी।

जंगल में उसे दो चोर मिले। रूपानी के भयावह रूप को देखकर उनकी एकदम घिग्घी बंध गयी और वे एकदम दौड़ खड़े हुए

रूपानी भी उनके पीछे दौड़ी और दौड़ते-दौड़ते चीखती रही, "अरे, चोरी करने जा रहे हो तो मुझे भी अपने साथ लेते चलो। मैं तुम लोगों की मदद ही करूंगी।"

चोरों को रूपानी का प्रस्ताव पसंद आया। वे रूपानी के निकट आ गये। उन्हें एक भेड़ चुरानी थी। पर उन्हें यह पता नहीं था कि यह भेड़ उन्हें मिलेगी कहां!

"यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो। चाहे घुप्प अंधेरा भी होगा, तब भी मैं भेड़ों का बाड़ा ढूंढ सकती हूं। तुम, बस, मेरे पीछे-पीछे चले आओ," रूपानी ने उन्हें कहा।

रूपानी की बात सुनकर चोर खुश हो गये और बिना कुछ बोले रूपानी के पीछे-पीछे हो लिये। भेड़ों के बाड़े पर जब वे पहुंच गये तो रूपानी ने उन्हें वहीं, बाहर ही रोक दिया और स्वयं भीतर चली गयी। तब वहां से वह जोर से बोली, "यहां बहुत सारी भेड़ें हैं। तुम्हें क्या चाहिए, भेड़ या भेड़ा?"

"अरी, इतनी ज़ोर से मत चीखो। भेड़ हो या भेड़ा, कोई फर्क नहीं पड़ता। बस, मोटा-ताज़ा हो!" चोरों ने उसे समझाने की कोशिश की।

"मोटा-ताज़ा ही होगा। पर यह तो बताओ, भेड़ चाहिए या भेड़ा," रूपानी फ़िर चीखी।

"अरी, ऐसे मत चीखो। बस, बढ़िया माल हो। भेड़, भेड़ा, कुछ भी चलेगा।" चोरों ने फिर समझाने की कोशिश की।

पर रूपानी तो रूपानी ही थी। वह वैसे ही चीखती रही और प्रश्न दोहराती रही।

इस बीच इतना हो-हल्ला हुआ कि भेड़ों का मालिक जग गया, और चोरों को मजबूर होकर वहां से भागना पड़ा। चोर भागे तो रूपानी भी उनके पीछे भागी। रूपनी के ऐसे

रूप को देखकर भेड़ों का मालिक भयभीत हो उठा और वहीं का वहीं ठिठककर खड़ा रह गया । उसे विश्वास हो गया था कि उसकी भेड़ों के बीच आज ज़रूर कोई पिशाचिनी आ घुसी है ।

उस दिन रूपानी के साथ-साथ चोरों को भी भूखे रह जाना पड़ा । अगले दिन देर रात होते ही वे एक मुर्गी चुराने निकले । लेकिन उन्हें यह पता नहीं था कि मुर्गी कहां मिलेगी ।

"यह सब मुझ पर छोड़ दो । घुप्प अंधेरे में भी मैं मुर्गियों के अहाते में पहुंच सकती हूं । तुम बस, मेरे पीछे-पीछे चले आओ," और यह कहकर रूपानी चोरों को गांव की ओर ले गयी । मुर्गियों के अहाते पर जब वे पहुंच गये तो उन्हें वहीं रुकने को कह कर वह स्वयं अहाते के भीतर चली गयी और वहां से पहले की तरह ही चीखती हुई बोली, "मुर्गा चाहिए कि मुर्गी? यहां बहुत सारे मुर्गे-मुर्गियां हैं ।"

"अरी, फिर तुम चीखने लगी! जो भी मुर्गा-मुर्गी वज़नी हो, उसे लेती आओ ।" चोर बोले ।

"वज़नी तो ठीक है, पर मुर्गा चाहिए कि मुर्गी?" रूपानी चीखते लगी ।

इतने हो-हल्ले से मुर्गे-मुर्गियां सब जग गये, और लगे कूं-कूं करने । मालिक जग गया, जिसे देखते ही चोर भाग खड़े हुए ।

"अरे, रुक जाओ, मुर्खो! फिजूल में क्यों भाग रहे हो? तुम्हें जो चाहिए, मैं वही तुम्हें दूंगी, पर दौड़ो तो नहीं ।" और इतना

कहकर रूपानी भी उनके पीछे दौड़ पड़ी ।

उधर उस अहाते के मालिक ने रूपानी के उस भयानक रूप को देखा तो वह गश खाकर वहीं गिर पड़ा ।

दो दिन तक चोर दिखाई नहीं दिये । उधर समूचे गांव में यह खबर फैल गयी कि गांव में रात के समय कोई पिशाचिनी उत्पात मचाती है । सब लोग एक तरह से भयभीत थे ।

तीसरे रोज़ चोर फिर चोरी करने निकले । उन्हें खाने को चाहिए था । लेकिन उन्होंने रूपानी को अपने साथ आने से मना किया । उन्हें विश्वास हो चला था कि यदि यह पिशाचिनी उनके साथ रही तो वे हमेशा भूखों ही मरेंगे ।

रूपानी को भी बड़े ज़ोरों की भूख लग रही

थी। इसलिए वह गांव से बाहर किसी खेत में पहुंची और वहां से शकरकंद तोड़कर ताबड़तोड़ खाने लगी। उस खेत का मालिक वहीं खेत में झोंपड़ी डालकर रहता था। उसकी जब नींद उचटी तो वह कुछ आवाज़ सुनकर झोंपड़ी से बाहर आया। पर जैसे ही उसकी नज़र रूपानी पर पड़ी तो वह घबरा गया और वह गांव के ओझा को बुलाने दौड़ पड़ा।

ओझा उस समय सो रहा था। वह वैसे ही नींद में किसान के पीछे चल पड़ा। खेत के बाहर बहुत दलदल था। ओझा ने उस दलदल को पार करने के लिए किसान की मदद चाही।

"ठीक है, मैं तुम्हें अपने कंधों पर उठा लेता हूं। पर तुम इस पिशाचिनी से मुझे मुक्ति दिलाओ," किसान बोला, "वह नहीं गयी तो मुझे भीख मांगनी पड़ सकती है।" और यह कहकर किसान ने ओझा को कंधों पर उठा लिया और दलदल में उतर पड़ा।

अंधेरा तो था ही। जिस समय वह दलदल पार कर रहा था, रूपानी को लगा कि वे चोर ही हैं, और किसी भेड़ को उठाये चले आ रहे हैं। इसलिए वह ज़ोर से चिल्लाते हुए बोली, "अरे, खूब मोटा-ताज़ा लगता है!"

यह सुनते ही किसान का खून जम गया। वह वहीं ठिठककर रह गया।

"मोटा-ताज़ा है या नहीं?" रूपानी फिर ज़ोर से चिल्लायी।

"यह तुम खुद ही देख लेना," किसान के मुहं से निकला, और वह ओझा को वहीं दलदल में पटक वहां से यह जा, वह जा।

ये सब समाचार पहले किसान को बराबर मिलते रहे थे। उसे ओझा वाला समाचार भी मिला। उसे रूपानी पर दया आयी कि यों ही लोग उसे पिशाचिनी समझ बैठे हैं। उसने फौरन रूपानी को ढूंढ़ निकाला और उसे नहला-धुलाकर अच्छे कपड़े पहना दिये। फिर उसने पुरोहित को बुलाया और अपनी शादी का मुहूर्त निकलवाकर उससे शादी कर ली। अब रूपानी के सभी दुखों का अंत हो चुका था।

प्रकृति रूप अनेक:
ज्वालामुखी पर्वत
एजियन सागर में तिरा नाम के एक द्वीप पर एक ज्वालामुखी था । कहते हैं ई. पू. १४७० में वहां एक भयंकर विस्फोट हुआ । इससे पहले शायद किसी को इन विस्फोटों के बारे में कोई जानकारी न थी । किन्हीं अनुमानों के अनुसार इस विस्फोट में कोई ७० क्यूबिक कि. मी. लावा बहा था और इसकी शक्ति कोई चालीस लाख हाइड्रोजन बमों के बराबर थी ।
समूचे विश्व में सजग ज्वालामुखी पर्वतों की संख्या ४५५ बतायी जाती है । केवल इंडोनेशिया में ही १६७ सजग ज्वालामुखी हैं ।
विश्व का एक बहुत बड़ा सजग ज्वालामुखी पर्वत हवाई द्वीप में स्थित है । इसका नाम 'मॉउना लोवा' है । सागरी तल से अपने शिखर तक यह १० कि. मी. (६ मील) लंबा है । इसके तल का व्यास लगभग २०० कि. मी. (१२४.२८ मील) है ।
१७८३ में दक्षिण-पूर्व आइसलैंड में होने वाले विस्फोट का लावा बहुत दूर तक बहा था । वह इतिहास-प्रसिद्ध है । इसकी लंबाई ६५.७० कि. मी., यानी ४३.५ मील थी ।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अगस्त १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

M. Natarajan

K. S. Vijayaker

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जून '९१ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

अप्रैल १९९१ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : माँ का प्यार!

द्वितीय फोटो : बच्चों का उपहार!!

प्रेषक : कुन्दन कुमार अम्बस्ता, द्वारा कामता प्रसाद, हिन्द पीढी, रांची (बिहार)

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

पाठकों को सूचना

'चन्दामामा' के प्रकाशन के लिए आवश्यक न्यूजप्रिन्ट कागज का दाम हाल में काफी बढ़ गया । फिर भी, पत्रिका का मूल्य नहीं बढ़ाने की हम ने भरसक कोशिश की । फ़िलहाल मौजूदा मूल्य से पत्रिका का प्रकाशन चालू करना नामुमकिन साबित हुआ । इसलिए हमें मजबूरन् अगले अंक से 'चन्दामामा' का मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है । जुलाई'९१ के अंक से चन्दामामा की एक प्रति का मूल्य रु. ४/– होगा और वार्षिक चन्दा रु. ४८/- होगा ।

इस संदर्भ में हम पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि रोचक कहानियों और मनोहर शीर्षकों से चन्दामामा को और आकर्षक बनाकर प्रस्तुत करेंगे ।

हमें आशा है कि हमारे पाठक और एजेंट हालत को सहृदयता के साथ समझेंगे और हमेशा की तरह सहयोग देंगे ।

—प्रकाशक

CHANDAMAMA (Hindi) June 1991 Regd. No. M. 5452